मीठे प्रवचन- 6

''प्रवचनकार''

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

प्रकाशकः

श्री सत्यार्थी मीडीया

रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा

फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

ऊँ ह्रीं नमः

प्रथम संस्करण : मार्च 2020

प्रतियाँ:- 2000

मीठे प्रवचन- 6

आचार्य मुनि वसुनंदी

मंगलाशीष:

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

श्री सत्यार्थी मीडीया प्रकाशक

रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा

फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज''

मो. 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

रुपये 100/-

दो शब्द

सभी जीवों के कल्याण के लिए सर्वोपरि सहकार देने वाले अरिहंत परमात्मा ही हमारे आराध्य देव हैं। वही त्रिलोक में पूजनीय अर्थात् त्रिभुवन के नाथ हैं और भव दुःखों का निवारण करने वाले हैं 34 अतिशयों से युक्त ऐसे अरिहंत परमात्मा को तो हमने नहीं देखा लेकिन उनकी वाणी को अपने शब्दों के माध्यम से हम तक पहुँचाने वाले आचार्य परमेष्ठी, जिन्हें हमारी श्रद्धा अरिहंत कहती है, उन्हें हमने साक्षात् देखा है जिनकी अमृतवाणी भव - भव को तिराने में सक्षम है। जिनके प्रवचनों में आगम है तो सिद्धांत भी है, जिनकी ज्ञानाराधना निरंतर - वृद्धिंगत होती रहती है, जिनके वात्सल्य की छांव में दुःख - संकटों में झुलसा हर व्यक्ति शीतलता का अनुभव करता है। जिनके द्वारा हर जिज्ञासा का संतुष्टिपूर्ण समाधान किया जाता है और जिनके सरल व सुलझे समाधान परिणामों को स्थिर करने में सहयोगी होते हैं। आचार्य भगवन् श्री पूज्यपाद स्वामी अपने ग्रंथ 'इष्टोपदेश' में कहते हैं -

''**मोहेन संवृतं ज्ञानं स्वभावं लभते न हि ।**
मत्तः पुमान्पदार्थानां यथा मदन कोद्रवैः ।।7।।

अर्थात् मोह से ढका हुआ ज्ञान आत्मा के स्वभाव को नहीं जान पाता, उसी प्रकार जिस तरह कि नशीले कोंदो के खा लेने से पागल हुआ मनुष्य पदार्थों को ठीक तरह नहीं जान पाता । वह मादकता उसके यथार्थ ज्ञान को ढाँक देती है। ऐसे ही मोह हमें भोगों व देह के प्रति आसक्ति प्रदान करता है। इन मोह के बंधनों को तोड़ने में समीचीन ज्ञान ही सहायक होता है, व्यक्ति तीन लोक का नाथ होकर भी मोह - माया के जाल में फँसा हुआ है।

पूज्य गुरुदेव के अमृतमयी वचन व्यक्ति को इस मोह - माया के जाल

से मुक्त कराने में समर्थ हैं। समाज व परिवार के व्यक्ति इस ज्ञान से संस्कारित होकर सुखपूर्वक सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरित होते हैं। पूज्य गुरुदेव के ज्ञान की उपमा शब्दों के माध्यम से नहीं दी जा सकती । आचार्य माणिक्यनंदी जी ने ज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि -

'**हिताहित प्राप्ति परिहार समर्थ हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ।**''

अर्थात् जो हित की प्राप्ति कराने में व अहित का परिहार करने में समर्थ है, वही ज्ञान प्रमाणिक होता है। जिसमें हित नहीं हो रहा और न ही अहित से बच पा रहे तो वह मात्र शब्दों का भण्डार है। पूज्य गुरुदेव के मीठे वचन व उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान हिताहित का ज्ञान तो कराते ही हैं साथ ही भूले भटके जीवन राही को पथ - प्रदर्शन कराने में भी सहायक हैं। अपने संकल्पों को साकार रूप प्रदान करने वाले जैन धर्म के ज्योतिर्मय सितारे, गहन चिंतनशीलता को लिए हुए जिनके ज्ञान में सागर की गहराई है तो हिमालय सम ऊँचाई है। जिनका वाणी रूपी झरना आज शब्दों रूपी बूंदों के माध्यम से जन - जन को तिरोहित कर रहा है। इस भीड़ भरे संसार में भी जो नित्य ज्ञान- ध्यान में लीन, नवीन कृतियों का निर्माण करते हैं। इनकी साहित्यिक शैली व दृष्टान्तों के माध्यम से समझाने की प्रक्रिया द्वारा जनमानस अन्यन्त प्रभावित होता है। इनकी कृतियों में आर्षं ग्रंथों का सार है। नई पीढ़ी में संस्कार व ज्ञान प्रदान करने के लिए ऐसी अद्भुत कृति की आवश्यकता महसूस की गई । सरल व सुबोध रूप से प्रस्तुत कृति का हर शब्द सामान्य पाठकों को भी सहजता से समझने के योग्य है। इनकी कृति का हर शब्द हमारी अज्ञान रूपी मूर्च्छा को दूर कर हमें पापों से बचाता है और हमारे परिणामों को निर्मल करता है, हमारे जीवन में ज्ञान रूपी सूर्य को उदित करता है और यही ज्ञान हमें भव - वारिधि को तिराने में नौका के समान है। पूज्य गुरुदेव की प्रस्तुत कृति **'मीठे प्रवचन'** आज जन - जन में लोकप्रियता को प्राप्त हो चुकी है। औषधि यदि मीठी हो तो प्रत्येक व्यक्ति उसका सेवन कर

स्वस्थ होना चाहता है। पूज्य गुरुदेव के मीठे प्रवचनों से इस आत्मा को औषधि की खुराक मिलती है। इनका चिंतन व अनुभव जब सुनते या पढ़ते हैं तो समता का भाव जागृत होता है, कषायों का दमन होता है व परिणाम विशुद्धि को प्राप्त होते हैं। पूज्य गुरुदेव के द्वारा सैद्धान्तिक व कई प्राकृत ग्रन्थों की रचना की गई है, उसी क्रम में यह कृति '**मीठे प्रवचन**' जिसका छठवाँ भाग आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत होने जा रहा है। अतः आप सभी इसका स्वाध्याय कर अपने अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करे व मोक्षमार्ग की ओर आगे बढ़ें, इस भव में न सही तो निकट भवों में मोक्ष प्राप्त करने में सफल हों । पूज्य गुरुदेव शताधिक वर्षों तक धर्म प्रभावना करते रहें व अतिशीघ्र ही वे अगले तीर्थ का प्रवर्तन करें, हम ऐसी मंगल भावना भाते हुए पूज्य गुरुदेव के चरणों में सिद्ध, श्रुत व आचार्य भक्ति सहित त्रय बार नमोस्तु करते हुए अपनी लेखनी को विराम देते हैं।

– गणिनी आर्यिका गुरुनंदनी

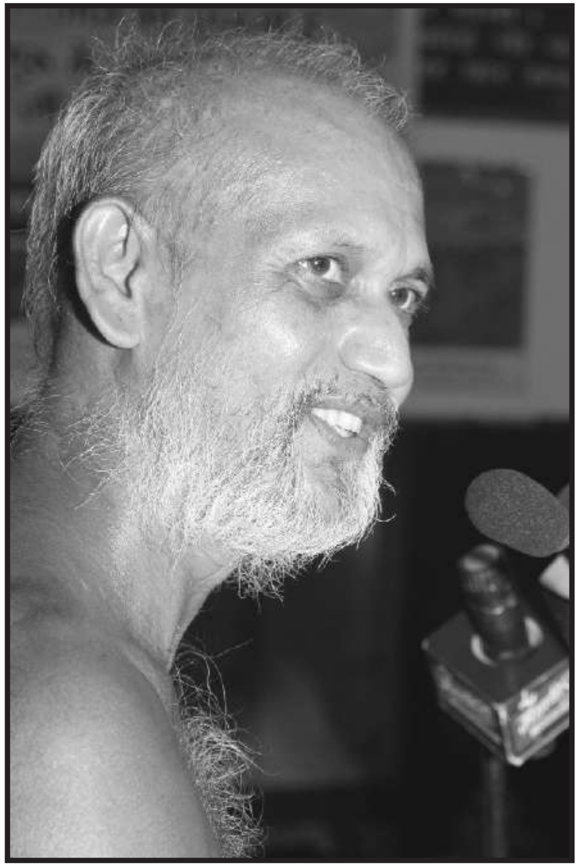

प.पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

1 ''सम्मान से सम्मान''

जो परिमाण में रहता है वही प्रमाण है, प्रमाण ही सच्चा है जो परिभाषा से बाहर है वह अप्रमाण है। भगवान् प्रमाण हैं, प्रमाण भी भगवान् की तरह मान - सम्मान के योग्य है, किसी का अपमान मत करो, इस जहान में अपमान करने वाले को अपमान व सम्मान करने वाले को सम्मान मिलता है।

2 ''प्रशंसा वृक्ष के फल''

आम के पेड़ पर आम और सेब के पेड़ पर सेब लगते हैं, अंगूर की बेल में अंगूर व कद्‌दू (कासीफल) की बेल पर कद्‌दू, करेले की बेल पर करेला व खीरे की बेल पर खीरा लगता है यह शाश्वत सत्य है तो इसे भी शाश्वत सत्य मानो कि प्रंशसा करने वालों की प्रशंसा व निंदा करने वालों की निंदा होती है, अतः परनिंदा से बचो ।

3 ''विकृति मे नहीं प्रकृति में''

विकृति प्राणियों की विकारों द्वारा निर्मित विशेष कृति है, संस्कृति संस्कारी प्राणियों की कृति है, आकृति प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति का बाह्य रूप है, प्रकृति प्राणियों की प्रकृष्ट या सर्वोत्कृष्ट कृति है उससे अच्छी दूसरी कोई कृति हो नहीं सकती अतः प्रकृति में जीओ परमात्मा बनो, परमात्मा पूर्ण प्राकृतिक है।

4 ''शोभा अपनों में''

मनचाहा बोलने वाले को अनचाहा सुनना पड़ता है, मनमानी करने वालो में तनातनी होती है, अपने को अलग दिखाने वाला सबके द्वारा अलग कर दिया जाता है, भले आदमी हो तो भले आदमी की तरह जिओ भले आदमियों के साथ। गाय की शोभा गाय में है बकरी में नहीं, हाथी की शोभा हाथी में है गधों में नहीं, चूहे की शोभा व सुरक्षा चूहों में है श्वान (कुत्तों) के साथ नहीं। तुम भी अपनी जाति, वंश व कुल के साथ जीओ, खून का रिश्ता कलंकित मत करो।

5 ''तौलने से वस्तु कीमती''

काँचुली छोड़ने से साँप संत नहीं हो जाता, पुण्य के वचन बोलने से पाप धर्म नहीं हो जाता, धर्म की चादर ओढ़ने से कसाई संन्यासी नहीं हो जाता, वासना की गॉठ खोलो, प्रभु भक्ति में चित्त को धो लो, जो भी बोलना है जबान से नहीं जीवन से बोलो, बिना तोले कोई वस्तु लेते देते नहीं तब बिना तोले बातों का व्यापार क्यों करते हो?

बात की करामात को जो जान गया है।
भगवान् के फरमान को वो मान गया है।

6 ''वाणी वीणा हो बाण नही''

तोतले बनना तो अच्छा है पर दोगुले नहीं, हकलाना इतना बुरा नहीं है जितना फुसलाना बुरा है, बोलने की तमीज न हो तो मौन रहना ज्यादा अच्छा है। बेबुनयादी, कलहकारक बोलने से तो लड़ाई - झगड़ा, आपत्ति - विपत्ति आती है, मौन रहने से वाक्य के बाण किसी के दिल को छलनी नहीं करते, किसी का बिल न चुकाना इतना बड़ा पाप नहीं जितना कि दिल दुःखाना।

7 ''संगत की रंगत''

यदि किसी के दिल में रहना चाहते हो तो किसी को दिल मे रखना सीखो, जिसके दिल मे रहना चाहते हो उसके आराध्य को अपने दिल में बसा लो, तुम्हारे दिल में अपने आराध्य को देखकर वह तुम्हें अपने दिल मे बसा लेगा, इस दुनिया में अच्छे को अच्छा व बुरे को बुरा निमित्त मिल ही जाता है, व्यक्ति का लक्षण, गुण, स्वभाव जानना है तो उसके आत्मीय मित्रों को देखकर जान लो कि वो कैसा है क्योंकि जो जैसा होता है वह अपने मित्र भी वैसे ही बनाता है।

8 ''धुन का पक्का''

धुन के पक्के व्यक्ति वहाँ तक पहुँच जाते हैं जहाँ तक उन्हें पहुँचना होता है, पहुँचाने के लिए पैर उतने आवश्यक नहीं जितना धुन का पक्का होना अर्थात् संकल्प की दृढ़ता। तन के कमजोर होने पर कोई फर्क नहीं पड़ता यदि मन बलवान् है तो, मन के कमजोर होने से बहुत फर्क पड़ता है तन बलवान् भी हो तो क्या क्योंकि थोड़े दूध से ज्यादा घी होना अच्छी बात है परन्तु बहुत सारे दूध से कम घी निकलना अच्छी बात नहीं है।

9 ''पहचान''

प्राणी की पहचान उसकी वाणी से हो जाती है जैसे बर्तनों की पहचान उसकी आवाज से हो जाती है, मोती की पहचान उसकी चमक से, पुष्पों की पहचान गंध से होती है। कौआ और कोयल का रंग एक जैसा हुआ तो क्या वाणी तो अलग - अलग है, यदि खच्चर घोड़े से ज्यादा तंदरुस्त हो तो क्या वह घोड़ा बन जायेगा? शियार और शेर की बराबरी कहाँ? तुम क्या हो और तुम्हारे अन्दर क्या है? इसका परिचय प्रत्येक व्यक्ति खुद अपनी वाणी से दे देता है वाणी वीणा की तान हो बाण का अग्रभाग नहीं।

10 ''मल त्यागकर कमल बनो''

कमल भी कमाल का उपदेश देता है यदि हम उस पर अमल करें तो अमल (शुद्ध परमात्मा) बन सकते हैं। क – आत्मा, मल – विकार (गन्दगी) जब तक आत्मा में मल है तब तक कमल पर बैठना सम्भव है अर्थात् कमलासन पर बैठना सम्भव है, जब सम्पूर्ण कर्ममल नष्ट हो जाता है तो आत्मा शुद्ध, सिद्ध बन जाती है क का अर्थ जल भी होता है, जल में यदि कीचड़ न हो तो कमल पैदा न हो सकेगा, कर मलमल कर पछताने से क्या होगा क के मल को त्यागकर निर्मल व अमल बनो।

11 ''लघुता से प्रभुता''

सुखी जीवन जीने का उपाय है कि हम इतने लघु बन जायें कि किसी के भी साथ बैठने में हमें अपमान महसूस न हो, और जिनके बीच बैठे हैं वे खुशी का अनुभव कर सकें, यह लघुता की कला यदि हमारे पास आ गई तो हम प्रभुता को प्राप्त कर लेंगे। ऐसा व्यक्ति जब खड़ा होता है तो सब उसके सम्मान में खड़े हो जाते हैं, अतः हम ऐसे बनें कि जब हम बैठें तो हमें हीनता का अनुभव न हो और जब हम खड़े हों तो सामने वाले को खड़े होने में हीनता का अनुभव न हो।

12 "लघु ही गुरु बन सकता है।"

लघु जब तक दुगुनी लघुता प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह दीर्घ नहीं हो सकता, जिस छोटे व्यक्ति में सामान्य व्यक्ति से दोगुनी लघुता आ जाती है तब वह लघु नहीं बड़ा बन जाता है। व्याकरण में भी दो लघु मिलकर एक गुरु होता है, मेरी दृष्टि में गुरु वही है जिसमें सामान्य व्यक्ति से दोगुनी लघुता व विनम्रता हो।

13 "खुद में सामर्थ्य पैदा करो"

किसी के सामने हाथ जोड़कर गिडगिडाना, भीख माँगना, दीन - दपट करना या किसी के पैरों को पकड़कर आगे बढ़ने के ख्वाब देखना मेरी दृष्टि मे व्यर्थ है, अपने पैरों में इतनी कुब्बत पैदा करो जिससे तुम अच्छाई के पर्वत की चोटी पर पहुँच सको, सम्भव है तब तुम्हारे पद चिह्न दूसरों को भी अच्छाई के पर्वत की चोटी पर पहुँचाने में समर्थ हो सकें।

14 ''प्रशंसा की प्यास''

यदि तू बुरा नहीं है तो दूसरों के द्वारा की गई अपनी बुराई से डरता क्यों है? और यदि तू अच्छा नहीं है तो दूसरों द्वारा बुराई किये जाने पर सत्य स्वीकार क्यों नहीं करता? यदि तू बुरा है तो दूसरे तेरी प्रशंसा करें ऐसी कल्पना भी व्यर्थ है और तू अच्छा ही है तो दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनने की प्यास भी क्यों हो सकती है? मेरी समझ में तू अपने आप को सुधार ले गर अपने आप को नहीं सुधारा तो तेरा ही पतन है। दूसरे अच्छा कहें या बुरा क्या फर्क पड़ता है। खुदा को पुकारने से पहले खुद को सुधार ले।

15 ''गन्दगी हटते ही मन निर्मल''

माता - बहिनें जब भोजन परोसती हैं तब पहले बर्तनों को धोती हैं क्योंकि गन्दे बर्तन में अच्छा भोजन नहीं परोसा जा सकता, आप भी तो नये कपड़े पहनकर के धूल - मिट्टी वाले रास्ते पर नहीं चलना चाहते, कई लोग तो बारात में भी अपने कपड़े बदलते हैं, यात्रा के अलग, ससुराल में पहुँचने के कपड़े अलग । अरे भाई ! गंदे स्थान पर तो कुत्ता भी नहीं बैठता तब तू ही बता तेरे गंदे मन में भगवान् कैसे बैठेगा ।

16 ''सौत और मौत''

सौत और मौत दोनों ही बुरी लगती हैं किन्तु जो सौत से परेशान है उसे मौत अच्छी लगती है और जो मौत से जूझ रही हो उसे सौत भी अच्छी लगती है। वास्तव में तो अच्छी कोई भी नहीं है, यशकीर्ति धर्म भावना की सौत है, विषय वासना धर्म भावना की मौत है। अच्छा तो यही है कि सौत और मौत से बचके अपनी आत्मा को सुहागन बनाओ, मुक्ति सुन्दरी कभी विधवा नहीं होती न ही अपने पति को कभी विधुर बनाती है।

17 ''अपना रूठे नहीं सपना टूटे नहीं''

अपने और सपने सुख भी देते हैं और दुःख भी, सपना जब तक टूटे नहीं तब तक सुख देता है और अच्छा लगता है, अपना जब तक रूठे नहीं तब तक सुख देता है। टूटा हुआ सपना रूठा हुआ अपना फूटे घड़े की तरह बेकार हैं, जिस पर न थेगड़ा लगाया जा सकता है और न ही फूटे हुए को काम में लिया जा सकता है, फूटे घड़े को, रूठे अपने को, टूटे सपने को छोड़ना व भूलना बड़ा कठिन होता है, सपनों को साकार करो जिससे टूटे नहीं, अपने को आत्माकार करो जिससे रूठे नहीं और घड़े को चैतनमय बनाओ जिससे वह फूटे नहीं ।

18 ''प्रतिकूलता मे निखार''

प्रेम का धागा वह तोडता है जो जागा नहीं, आत्मीय वह है जो छोड़कर भागा नहीं। चाँदी तो कभी काली भी पड़ जाती है, मुसीबतें तो अच्छे व्यक्ति पर आती हैं चाँदी की तरह । ये चाँदी है जो काली पड़ सकती है रांगा नहीं। मुसीबतों की अग्नि में तपने से घबराना क्यों? तेरा जीवन कूड़ा कचरा नहीं सोने की डली है वह तपने पर निखर जायेगी, कमजोर व बेईमान व्यक्ति प्रतिकूलताओं में बिखर जाते हैं, आत्मविश्वासी व ईमानदार प्रतिकूलताओं से निखर जाते हैं। ऐसे बनो कि बिखर न पाओ निखर जाओ ।

19 ''नेक इंसान''

अच्छे के साथ अच्छा बनकर रहो बुरे के साथ बुरा नहीं, हीरे से हीरे को तो काटा जा सकता है किन्तु कीचड़ से कीचड़ नहीं धो सकते। इतना ही नहीं तराशे हुए हीरे को तो कीचड़ भी गन्दा नहीं कर सकती। जला हुआ दीपक बुझे हुए दीपक को जला तो सकता है किन्तु अनेक बुझे दीपक एक जलते हुए दीपक को बुझा नहीं सकते, अपने जीवन को प्रज्ज्वलित दीपक बनाओ न बुझे दीपक बनो न किसी को बुझाओ ज्योतिर्मान बनो, महान बनो, गुणवान बनो, भगवान् बनो किन्तु कभी शैतान, हैवान मत बनो यदि भगवान् नहीं बन सकते तो एक अच्छा इंसान बनो ।

20 ''सच्चाई और अच्छाई स्वयं में''

सच्चाई और अच्छाई की तलाश में पूरी दुनियाँ को अनेक बार घूमकर देख लिया किन्तु वह मुझे तब तक नहीं मिली जब तक मेरे अन्दर न मिली, जिस दिन से मैंने अपने अन्दर में सच्चाई व अच्छाई देखी है तब से विश्वास है कि संसार में सच्चाई व अच्छाई की कहीं कमी नहीं है, नकली चुम्बक से असली लोहा नहीं पकड़ा जा सकता और न ही चूहों को हाथी की पोशाक पहनाकर हाथी बनाया जा सकता है। तुम्हारा हित जब भी होगा तुम्हारी सच्चाई व अच्छाई से होगा, जीवन में कुछ बनो या ना बनो परन्तु सच्चे और अच्छे बनो ।

21 ''शाश्वत वर्तमान''

अतीत वह पुस्तक है जिसमें अनुभव के पाठ लिखे होते हैं और भविष्य वह काल्पनिक विचारधारा है जिन्हें हम साकार रूप देना चाहते हैं, सत्य तो यह है कि अतीत वे कबूतर हैं जो हमारे हाथ से उड़ चुके हैं और भविष्य कबूतर के वे बच्चे हैं जिनके पैदा होने की उम्मीद हमने पाल रखी है। अतीत और अनागत स्वप्न और कल्पना के विषय तो हो सकते हैं किन्तु वास्तव में जीवन्त नहीं।शाश्वत जीवित रहता है वर्तमान, जिसको आज तक कोई मार नहीं सका और जन्म लेने से कोई रोक न सका ।

22 "जब खिलौने बोले"

एक दिन बेहताश, उदास व निराश देखकर वे खिलौने झट से बोल पड़े जो मेरे बचपन में मुझे हँसाते थे आनन्द देते थे और मौज मस्ती के निमित्त बनते थे कहने लगे तुम्हें ही जल्दी थी जल्दी बड़े होने की बताओ क्या मिला तुम्हें बड़ा बनने पर, बड़े की तरह कढाई मे तले जा रहे हो। आज उनकी बात सुनकर अफसोस होता है काश मेरा बचपन पुनः मुझे मिल जाये।

23 "बुढापे की राख"

उम्र मेरी क्या बढ़ी मेरा बचपन छिन गया, ख्वाहिशों की पूर्ति में यौवन धूलि में मिल गया, बुढ़ापे की जंजीरों को तोड़ना तो चाहता हूँ किन्तु मौत यह कहती है अब कब सोचेगा तेरा तो जीवन निकल गया, सत्य तो यही है जवानी बचपन को निगल गयी व जवानी संघर्षों में पिघल गयी, बुढ़ापे की राख मेरे सामने पड़ी है, समय की आँधी जब चलती है तो आँखें धुंधली कर देती है आज मुझे कोई बचाने वाला नहीं, तुम चाहो तो मेरी दशा को प्राप्त करने से पहले अपना बचाव कर लो।

24 ''पोषण और शोषण किसका''

पोषण और शोषण जीवन के लिए दोनों वरदान भी हैं अभिशाप भी। कषायों का पापों का शोषण, दया और परोपकार का पोषण निः सन्देह मानव जाति को वरदान है। इसके विपरीत कषायों और पापों का पोषण, भक्ति, दया आदि पुण्य कार्यों का शोषण निः सन्देह प्राणी मात्र के लिए अभिशाप है अभी तक हम सोचते हैं कि सामने वाले ने हमारा शोषण किया है वो ही हमारा शत्रु है किन्तु सत्य यह है कि हम ही अपना शोषण कर रहे हैं हम ही अपने सबसे बड़े शत्रु हैं, हमारे शत्रु व मित्र बाहर के शोषक व पोषक नहीं अपितु हम खुद ही हैं।

25 ''भौतिकता की आंधी''

हम जन्म से इतने कठोर दिल, गद्दार, चालबाज या फरेबी न थे । इस समय की अंधी दौड़ में भौतिकता की अंधी आंधी ने, स्वार्थपर्ता के अंधकार ने और विपत्तियों की सघन मूसलाधार वर्षा ने, संकटों के घने बादलों ने हमें ऐसा बना दिया है, अन्यथा हम भी जल जैसे तरल, बॉसुरी जैसे सरल, शिशु जैसे भोले और भक्त जैसे आदर्श थे। हमारे अन्दर भी मासूमियत की हद तक मासूमियत थी ।

26 ''असली चेहरा कौन सा''

अग्नि से मोम पिघल जाता है, अधिक रगड़ने पर चंदन भी जल जाता है, धूप और हवा से हिमखण्ड भी गल जाता है, हवा का झोका मेघ समूह को भी दल जाता है, थोड़ी सी पानी की बूंदें धूल को कीचड़ बना देती हैं, उसी तरह अपनों के द्वारा किये गये छल - कपट ने, अनपेक्षित पाप कर्म के उदय ने हमारी बेलगाम आकांक्षाओं ने, हमारी सहनशीलता की कमजोरी ने हमें आज इस दर पर लाकर खड़ा कर दिया है। यह हमारा असली चेहरा नहीं हमारा असली चेहरा तो हजारों घूघटों के अन्दर है तुम उसे क्या पहचानोगे, कभी - कभी तो उसे हम भी नहीं पहचान पाते ।

27 ''नाम से नहीं काम से ऊँचे

संसार में सुखद जिन्दगी जीने के लिए व्यक्ति सुन्दर चाम, अधिक दाम, अच्छे काम, प्रसिद्ध नाम और सच्चे राम को पाना चाहता है किन्तु हराम और आराम की जिन्दगी जीने में न तो राम मिलता है न आराम वह बदनाम होता हुआ अकाम में फॅसकर अपना जीवन ही तमाम कर लेता है। या तो अच्छा काम करो जिससे तुम्हारा नाम हो या नाम इतना ऊँचा उठाओ कि काम हो जाये ।

28 "जीवन का गीत"

जीवन मे जीत, मीत, गीत और संगीत इतने ही आवश्यक हैं जितना कि वृक्ष के लिए भूमि, जल, वायु और सूर्य का प्रकाश आवश्यक होता है। दुनियाँ आपके हारने का निश्चय कर चुकी हो तब आपकी जीत या कुछ भी आपके पास न बचा हो तब आपका मीत, अपने अतीत की कथा रूपी सच्चा गीत, आत्मा की ध्वनि रूपी संगीत से ही जीवन सार्थक होगा। संसार की रीति - नीति, ईति और भीति- धर्म की प्रतीति और आत्मा की अनुभूति कराने में बाधक बन जाती है, अतः ठीक बनो निर्भीक बनो ।

29 "नासमझी"

बड़ों के सामने अपनी बुद्धिमानी दिखाना नासमझी है, सामर्थ्य होते हुए भी दलदल में फॅस जाना नासमझी है, शक्ति का दुरुपयोग करके मजबूरी का शिकार बनना नासमझी है, परोपकार छोड़कर अत्याचार करना भी नासमझी है, न्याय का पक्ष न लेकर अन्याय सहन करना भी नासमझी है, सत्य जानते हुए भी स्वीकार न करना नासमझी है, परमात्मा से छल - कपट करना भी नासमझी है - जिन्होंने ये शिक्षा यदि ना समझी तो उसकी भी नासमझी है।

30 ''नींव को सींचो''

कर्त्तव्यों की नींव पर ही अधिकारों के भवन खड़े होते हैं, अधिकारों की दीवार बनाकर कर्त्तव्यों की नींव नहीं खोदी जाती। वृक्षों का संवर्द्धन जड़ों में पानी देने से है पत्तों को सींचने से नहीं। मानवता की जड़ों को मत काटो, भारतीय लोगों को वर्ण, जाति, पन्थ, आम्नाय, अमीर - गरीब - विद्वान् - मूर्ख आदि में मत बॉटो क्योंकि इंसान एक था, एक है, एक ही रहेगा वह इंसान वही है जिसमें इन्सानियत जीवित है।

31 ''मानवाकृति नहीं मानवता का महत्व''

हरेक मानवाकृति को जीवन्त मानव नहीं कह सकते, मानवता से रहित मानव तो ऐसा समझो जैसे जल से रहित नदी, घी से रहित दूध, दृष्टि से रहित नेत्र, मिठास से रहित मीठा । यदि हमारी मानवता जीवित है तो हमारी जिन्दगी असली पुष्प की तरह है प्लास्टिक के फूल - फलों की तरह नहीं, जिस प्रकार प्राणों के बिना शरीर मुर्दा है, चंद्रमा के बिना चांदनी असम्भव है, अमावस्या के दिन शशि और कोहरे के दिन रवि के दर्शन असम्भव होते हैं उसी प्रकार मानवता से रहित मनुष्य में सच्चा मानवपना असम्भव है।

32 ''हम स्वयं ही भाग्य निर्माता हैं।''

तुमको तबाह तुम्हारे माता - पिता या भाई - बहन ने नहीं किया बल्कि तुमको तबाह किया है तुम्हारी बेलगाम इच्छाओं ने । अपने गुनाह दूसरों पर थोपना भी बहुत बड़ा गुनाह है, इतिहास गवाह है इस बात का जिसने खुद के गुनाह कुबूल नहीं किये वे बबूल बन गये, खुद के काँटों से खुद के ही शरीर को फाडते रहते हैं। जीवन के उसूल ऐसे बनाओ जो तुमको भायें और दूसरे भी अपनायें, जीवन में बहारें आयें और खुशियाँ खुद आकर मनायें ।

33 ''जो दिया वही पाया''

खुद की खुशी के लिए खुदकुशी करना खुदकुशी से ज्यादा बद्तर है। खुदकुशी तो शरीर को एक बार ही मारती है किन्तु दूसरों की खुशियों की खुदकुशी करने से अनेक बार हमारी खुशी की खुदकुशी हो जाती है। दूसरों को जलाने के लिए अग्नि का गोला फेकोंगे तो पहले खुद ही जलोगे, दूसरे को सुगन्धित पुष्प से खुश करोगे तब आपकी नासिका भी अवश्य तृप्त होगी, मेंहदी बॉटने वालों के हाथ मेहंदी से रचते हैं, कोयले बाँटने से हाथ काले होते हैं, बुराई करने वाले को भलाई नहीं मिलती और भलाई करने वालों का बुरा नहीं होता ।

34 ''बुराई कभी अच्छाई नहीं हो सकती''

चाहे अकेले में या सबके सामने मुँह में मिर्च रखो या नमक स्वाद वही आयेगा जो स्वाद उसमें है, नमक खाते हुए भी दूसरों को जताया जा सकता है कि मैं मिश्री खा रहा हूँ किन्तु दूसरों को जताने से या दूसरों द्वारा मानने से नमक मिश्री नहीं हो जाता, मिश्री खाने वाले को भले ही दुनिया कहे कि तू नमक खा रहा है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, मिश्री - मिश्री ही रहेगी, अतः खुद अच्छे बनो दुनिया की परवाह न करो।

35 ''जीवन के मोड पर संभलना जरूरी''

रास्ते के मोड से ज्यादा खतरनाक है जीवन का मोड। कुशल ड्राइवर मोड पर गाड़ी slow कर लेता है तभी Turn लेता है, यदि speed slow न करे तो गाडी पलट जायेगी किन्तु समतल पर गाडी में speed देता है, यदि समतल पर गाडी की speed कम रही तो कोई भी टक्कर मारकर चला जायेगा, ज्यादा रही तो टकरा जायेगी। यही नियम जीवन की गाड़ी के साथ समझो, जब जीवन में कोई मोड़ घटित हो रहा हो तो speed कम करनी चाहिए और समतल है तो उचित speed में चलना चाहिए अन्यथा दुर्घटना का शिकार बनना पड़ेगा।

36 ''उतार - चढ़ाव का नाम जीवन''

जिस प्रकार उतार के समय गाड़ी को सम्भालना जरूरी होता है क्योंकि उसकी Speed स्वतः ही बढ़ जाती है। चढ़ाई के समय खुद को साधना जरूरी होता है क्योंकि वहाँ speed स्वतः ही घट जाती है, चढ़ाई पर शक्ति ज्यादा व्यय होती है उतार में कम। यही सिद्धान्त जीवन में भी लगा लेना चाहिए जिसका जीवन दौड़ रहा है समझो वह उतार की तरफ है, जिसकी गति slow हो रही है समझो वे उन्नति की ओर हैं।

37 ''भरोसा कमाना नहीं, पाना है।''

तन से की गई मेहनत और धन का संग्रह अच्छे वस्त्र, आभूषण, पकवान, वाहन, महल, मकान, नौकर - चाकर तो दे सकता है किन्तु भरोसेमन्द आदमी नहीं। जो तुम पर या तुम जिस पर भरोसा करते हो। तो उसकी सूरत, सीरत या नसीयत से नहीं अपितु नीयत देख कर ही भरोसा किया जाता है। भरोसा कमाया नहीं जाता पाया जाता है, जीता और जीया जाता है, वस्तु की तरह माँगा व दिया नहीं जाता। पहले अपने आपको साहस और विश्वास से भरो, फिर दूसरों पर भरोसा करो या भरोसा पाओ ।

38 ''शांति का जीवन''

नींद छोटी मृत्यु है व मृत्यु लम्बी नींद। सुखद नींद पाने के लिए दिन को सुख व शांतिपूर्वक बिताना जरूरी है, व्यर्थ की कलह - क्लेश, दीनवृत्ति और अशांत परिणाम, बेलगाम आकांक्षायें, तनाव व दुष्चिंताओं का त्यागना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है अच्छी मृत्यु को प्राप्त करने के लिए क्रोधादि कषायों का त्याग पंचेन्द्रिय के विषयों से विरक्ति, पाप छोड़कर व्रतों को संकल्प पूर्वक ग्रहण करना, भक्ति, वैराग्य, तप, और ध्यान आदि कार्य भी अनिवार्य हैं।

39 ''काबिल कौन''

ज्यादा सीखने वाला ज्यादा काबिल हो जरूरी नहीं है, किन्तु अच्छा सीखने वाला और धारण करने वाला नियम से अच्छा ही होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। कम बोलने व ज्यादा याद करने वाला अच्छा आदमी हो ऐसा अनिवार्य नहीं किन्तु अपनी सभी अच्छाईयों को और दूसरों की बुराईयों को जो कभी याद नहीं करता तत्काल ही भूल जाता है उससे बेहतर संसार में कोई आदमी नहीं है यह ध्रुव सत्य कथन है। दूसरों की अच्छाई, अपनी बुराई याद रखने वाला भी महान् ही होता है।

40 ''भाग्य - पुरुषार्थ''

सफलता का महल खड़ा करने के लिए भाग्य की भूमि जितनी आवश्यक होती है पुरुषार्थ की नींव व पिलर भी उतने ही आवश्यक हैं। यह बात ठीक है कि भाग्य की भूमि के बिना पुरुषार्थ के स्तम्भ व दीवार खड़े नहीं हो सकते किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि बिना स्तम्भ व दीवार के सिर्फ भूमि से भी भवन नहीं बन सकता अतः जीवन में भाग्य व पुरुषार्थ का उतना ही महत्व है जितना वंश वृद्धि में पति - पत्नी का ।

41 ''सुन्दरता शब्दों से नहीं भावों से''

आँखों से जो कहा जा सकता है वो जुबान से नहीं, दिल से जो उपहार दिया जा सकता है वह हाथों से नहीं, भावों की इबादतों में जो सामर्थ्य होती है वो शब्दों की अर्चना में नहीं। मिठास की निर्भरता फलों की परिपक्वता पर है वृक्ष की ऊँचाई या बौने पर नहीं, सुन्दर चेहरे वाले व्यक्ति के भाव सुन्दर ही हों यह जरूरी नहीं किन्तु सुन्दर भाव वाले व्यक्ति का चेहरा कैसा भी हो श्रेष्ठतम सुन्दर है, प्रभु की दृष्टि में अति सुन्दर है।

42 ‘‘आदर्श व्यक्तित्व ही श्रेष्ठ’’

अच्छा व्यक्तित्व खुद की सुख - शांति का हेतु है और अच्छा व्यवहार दूसरों की सुख - शांति का निमित्त है। दूसरों की दृष्टि में जिसका व्यवहार बुरा है ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व भी आदर्श रूप हो सकता है। आदर्श व्यक्तित्व के धारक व्यक्ति का व्यवहार निष्पक्ष व्यक्ति के द्वारा आदर्श ही माना जाता है किन्तु फिर भी आदर्श व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अपने व्यवहार को भी आदर्श बना लें तो सोने पे सुहागा चरितार्थ हो जाये, आदर्श व्यक्तित्व के साथ आदर्श व्यवहार कठिन है असम्भव नहीं।

43 ‘‘अच्छा समय, बुरे वक्त पर नहीं आता’’

बीज का अंकुरण समय पर ही होता है यथोचित् समय से पूर्व नहीं। सही घड़ी में बारह, बारह बजे ही बजेंगे उससे पहले या पीछे नहीं यदि पहले या पीछे बज रहे हैं तो घड़ी ठीक नहीं। सूर्योदय - सूर्यास्त, कृष्णपक्ष - शुक्लपक्ष, पूर्णिमा - अमावस्या, दिन - रात अपने नियत समय पर ही आते हैं, आते थे और आते रहेंगे, इसी तरह हमारे आपके जीवन में अच्छा वक्त पहले भी आया था, आज भी आ सकता है और भविष्य में भी किन्तु वह अच्छा वक्त अच्छे वक्त पर ही आयेगा बुरे वक्त पर नहीं।

44 ''संकीर्ण मान्यतायें विराट व्यक्तित्व में बाधक''

जितने बड़े दर्पण में देखोगे आकृति उतनी ही बड़ी दिखाई देगी, बिम्ब कभी छोटा - बड़ा नहीं होता किन्तु प्रतिबिम्ब को छोटा - बड़ा किया जा सकता है, जब हम अपनी सोच का दर्पण बड़ा करते हैं तब हमें सब कुछ बड़ा दिखाई देता है छोटा करने पर छोटा । विराट दृष्टिकोण से संकीर्ण मान्यताओं की प्राप्ति नहीं होती और संकीर्ण दृष्टिकोण से विराट को प्राप्त नहीं किया जा सकता । चींटी कितनी ही बड़ी हो जाये किन्तु वह बड़ी चट्टान को नहीं उठा सकती तथा हाथी कितना भी कमजोर क्यों न हो वह जमीन पर पड़े चींटी के पैर के अंश को नहीं उठा सकता ।

45 ''जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि''

जिस दृष्टि से आप अपने को जीव मानते हैं उस दृष्टि से आप अपने को मानव नहीं कह सकते उसके लिए और संकीर्ण दृष्टि की आवश्यकता है, जिस दृष्टि से मानव कहते हैं उससे हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, पारसी नहीं कह सकते। जिस दृष्टि से आप अपने को किसी सम्प्रदाय का मानते हैं उस दृष्टि से आप अपने को किसी परिवार का मुखिया नहीं कह सकते, क्योंकि दूरवर्ती पर्वत पर खड़े होकर शहर दिखता है मौहल्ले नहीं, निकट आने से मौहल्ले दिखते हैं व शहर नहीं और निकट आने पर घर दिखाई देता है उसके कमरे व शहर नहीं । जैसी आपकी दृष्टि वैसी सृष्टि

46 "सकारात्मक सोच"

यदि आप सफलता के शिखर को छूना चाहते हैं, अपनी हर बुराई को भलाई में बदलना चाहते हैं, दुर्गुणों को छोड़कर गुणों को ग्रहण करना चाहते हैं, दीन व्यक्तित्व को छोड़कर उदार व्यक्तित्व प्रकट करना चाहते हैं, अशान्ति और कलह को सुख - शांति में बदलना चाहते हैं इतना ही नहीं विश्व में श्रेष्ठ व अनुपम व्यक्ति बनना चाहते हैं तो इसके लिए आपको एक व्यक्ति की आवश्यकता होगी जो आपको इन सब में सहायक होगा। क्या आप उस व्यक्ति से मिलना चाहते हैं? यदि हाँ तो देर मत करो जल्दी से आईना उठाओ और सकारात्मक ऊर्जा से भरकर मुस्कुराकर अपना चेहरा देखो, हाँ यह व्यक्ति आप ही हैं आप - आप - आप।

47 "संसार का रंगमंच"

संसार के रंगमंच पर प्रत्येक व्यक्ति इस नाटक का पात्र बना हुआ है, कुछ ऐसे पात्र हैं जो रोते - रोते आते हैं और रोते - रोते चले जाते हैं। और कुछ ऐसे हैं जो रोते - रोते आते हैं दूसरों को रुलाते हैं और रोता छोड़ जाते हैं, तीसरे हँसते आते हैं हँसते चले जाते हैं, चौथे वे हैं जो हँसते आते हैं दूसरों को हँसाते हैं, हँसता छोड़ जाते हैं, इस रंग मंच पर जो भी रोल करने आये हो उसे इतनी शिद्दत से करो कि लोगों की जो अपेक्षा है उससे आगे अपना प्रयत्न कर सको और आपके इस रोल पर तालियाँ सामने ही नहीं पीठ पीछे भी बजती रहें और लोग आपका नाम स्मरण कर सदा मुस्कुराते व हँसते रहें।

48 "जीवन के अनेक रूप"

जिन्दगी सूर्योदय की तरह नही जो नियम से पूर्व से उदय हो और पश्चिम में अस्त हो जाये। आकाश से बरसते पानी की तरह भी नहीं जो नियम से नीचे गिरेगा किन्तु यह तो नदी की लहर की तरह कभी भी कहीं भी उठ व डूब सकती है, पुष्प वाटिका में मंडराते भौंरे व तितली की तरह है वे कभी भी किसी भी पुष्प व कली पर बैठ सकते हैं अथवा हवा से हिलने वाली डाली की तरह है कभी भी हवा चले वह डाली हिल सकती है। पुरुषार्थ की हवा जितनी तीव्र होगी जीवन रूपी जल की लहर उतनी ऊँची उठ सकती है।

49 "क्षमता प्रकट करें"

जिन्दगी तो मार्ग में पड़ी धूल के कण की तरह है कभी किसी के पैर की ठोकर खाती है तो किसी के सिर पर सवार हो जाती है। जिन्दगी तो पुष्प वाटिका के फूल की तरह है वह उस फूलमाला में भी जा सकता है जो दुल्हा- दुल्हन के गले की शोभा बढ़ाये या देवता पर चढ़े या मुर्दे पर भी चढ़ाया जा सकता है, वह फूल किसी के लिए प्रेमिका के मिलन का कारण व किसी के विरह का भी कारण हो सकता है। जिन्दगी से हारकर ऐसे उदास मत बैठो जले हुए बीज की तरह, अपितु अपनी क्षमता को प्रकट कर चाहो तो बीज को विशाल वृक्ष में बदल दो ।

50 ''पुण्य से वस्तु की प्राप्ति सहज''

दौलत मेहनत से कमाई जा सकती है, छीन कर भी पाई जा सकती है, बेवजह लुटाई जा सकती है, किस्मत की भूमि में भी उगाई जा सकती है किन्तु स्वयं के पुण्य के बिना खाई नहीं जा सकती, सौभाग्य के उदय के बिना पुण्य में लगाई नहीं जा सकती अपने - अपने भाग्य का ही प्रत्येक प्राणी को मिलता है, दूसरे के भाग्य को कोई छीन नहीं सकता, दूसरा तुम्हारे भाग्य को नहीं छीन सकता । वस्तु के छिन जाने से भाग्य नहीं छिनता, वस्तु के मिलने से भाग्य नहीं मिलता। वस्तु को पाने की नहीं भाग्य बनाने की, पुण्य कमाने की और सौभाग्य को जगाने की कोशिश करो ।

51 ''नोट का उपयोग या दुरुपयोग''

कागज के नोट किसी के लिए नोट हैं तो किसी के लिए वोट, किसी को ओट का काम करते हैं तो किसी को सपोट देते हैं किसी को नोट खोट जैसे लगते हैं तो किसी को रिमोट जैसे, किसी की क्षुधा शान्त करने के लिए रोट जैसे लगते हैं इसीलिए दुनियाँ नोटों के पीछे पागल है, नोटों से तिजोरी तो भरी जा सकती है तृष्णा की खाई नहीं। नोटों के माध्यम से सामग्री मिल सकती है शांति नहीं, नोटों से साधन उपलब्ध हो सकते हैं साधना नहीं, नोट भोग दे सकते हैं योग नहीं, नोटों से विषय - वासना की पूर्ति होती है प्रभु भक्ति और गुरु उपासना नहीं, नोटों से अहंकार का हिमालय बनता है जिनालय व शिवालय नहीं ।

52 "प्रभावक शब्द"

जिस व्यक्ति का पक्ष कमजोर होता है वही जोर - जोर से चिल्लाकर बोलता है, मजबूत पक्ष को तो बोलने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। जोर से चिल्ला - चिल्लाकर बोलने से आपसे कोई प्रभावित न होगा, एक बार सुनकर दूसरी बार आना भी न चाहेगा किन्तु प्रभावक शब्दों से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होगा, चाहे आप जोर से बोलें या धीरे से इतना अवश्य है कि प्रभावक शब्द जोर से बोले जाते हैं तो व्यक्ति दूर से सुनता है, धीरे - धीरे बोलते हैं तो कान लगाकर सुनता है, दूसरों को निकट बुलाने के लिए धीरे बोलो, मीठा बोलो, प्रभावक बोलो, सीमित और हितकारी बोलो ।

53 समाज का निर्माण

आप जानते हैं मन्दिर में शिखर एक होता है वेदियाँ अनेक भी हो सकती हैं,पिलर, स्तम्भ उससे ज्यादा होते हैं, नींव में पत्थर उससे भी ज्यादा। जीवन में नोटों का उतना ही महत्व है जितना इमारत में शिखर का होता है किन्तु सिक्कों का उतना होता है जितना नींव में पड़े पत्थर का होता है, समाज मे नोटों की तरह बहुमूल्य व्यक्ति अंगुलियों पर गिनने लायक ही होते हैं किन्तु सिक्कों की तरह पाये जाने वाले सामान्य, निर्धन व लघु व्यक्ति अनेक होते हैं जिनके बिना समाज का निर्माण असम्भव है। अंगुली भी तब बनती है जब उसमें तीन पोरे हों ।

54 ''मर्यादित ही सर्वोपयोगी''

आवश्यकता से ज्यादा समझदारी दिखाना भी नासमझी का लक्षण है ।आवश्यकता से कम समझदारी भी पूर्ण उपयोगी नहीं। सब्जी में उचित नमक आदि मसाले डालने पर वह ग्रहण करने योग्य होती है, अति नमक आदि मसाला भी सब्जी को अनुपयोगी बना देता है। अति समझदार वे कहलाते हैं जो मान - मर्यादा एवं सीमा रेखा का उल्लंघन कर चुके हैं और नासमझ वे जिन्होंने मान - मर्यादा, सीमा रेखा के दायरे में प्रवेश ही नहीं किया है अतः मर्यादा के बाहर चाहे इस किनारे पर या उस पर दोनों बराबर हैं मर्यादा में रहने वाला ही सर्वोपयोगी होता है।

55 ''दृष्टिकोण''

यह तो अपना - अपना देखने का दृष्टिकोण है किसी व्यक्ति को दिखता है कोई व्यक्ति रिक्शा खींच रहा है हो सकता है वो पूरे परिवार को चला रहा हो, किसी को कोई आँख बंद किये बैठा दिख रहा है हो सकता है वह मानव जाति के कल्याण की भावना भा रहा हो, किसी को कोई व्यक्ति ताड़पत्तों पर काँटे की नोक से लिखता दिखाई दे रहा है हो सकता है वो प्राणी मात्र के कल्याण की इबादतें लिख रहा हो, तुम्हें कुम्भकार चाक चलाता दिखाई दे रहा है हो सकता है वह अपनी गृहस्थी के लिए बर्तनों की व्यवस्था कर रहा हो, आपको बुढ़िया सूत कातती दिखाई दे रही है हो सकता है वह दया करुणा से पूरित होकर सर्दी से बचने को प्रबन्ध कर रही हो, मार्ग बुहारने वाली शबरी भी प्रभु नाम की भक्ति करती है, दृश्य एक दृष्टि अनेक ।

56 ''कर्त्तव्य पालन से अधिकार स्वतः प्राप्त''

कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के पास कर्त्तव्य पालन करने के सिवाय अधिकारों का उपयोग करने का समय ही कम होता है। कर्त्तव्य तो इस दुनियाँ में जन्मे प्रत्येक प्राणी को पालन करना चाहिये । ये बात अलग है कि किसी को कर्तव्य पालने को समय नहीं, किसी को अधिकार माँगने का । बिना कर्त्तव्य पाले जो अधिकारों का उपयोग कर रहा है समझो जल की धार पर अपनी भावी वसीयत लिख रहा है और जो कर्त्तव्य पालने में संलग्न है वह सुखशांति के चिर स्थायी स्तम्भ खड़े कर रहा है।कर्त्तव्य पालन करने वालों को अधिकारों के प्रयोग का फल स्वतः ही मिल जाता है। बिना कर्त्तव्य पाले अधिकारों के लिये जो लड़ रहे हैं वे अपनी फटी झोली में जल भर रहे हैं।किसी ने ठीक ही कहा है -

''क्या बेचकर खरीदूँ मैं फुर्सत की जिन्दगी ।
सब कुछ तो गिरवी रखा है जिम्मेदारियों के बाजार में''

57 ''निखरा हीरा, बिखरा काँच''

मेंहदी पीसने पर रंग लाती है, चंदन घिसने पर शीतलता प्रदान करता है, मोमबत्ती जलने पर प्रकाश करती है, पुष्प खिलने पर सुगंध देता है, चंद्रमा उदय होने पर ही चांदनी देता है और गतिमान सूर्य भी स्वयं चलकर इस पृथ्वी को प्रकाशित करता है। क्षमा रूप को धारण करने वाली यह पृथ्वी हल के कर्षण की वेदना को सहन कर बीज को अंकुर, पौधा व वृक्ष बनाती है, इतना ही नहीं पुष्प और फल को सामर्थ्य भी पृथ्वी ही देती है। फल भी सूर्य का प्रचण्ड ताप सहन कर ही मिठास प्राप्त करते हैं। मैं तो ऐसा समझता हूँ प्रत्येक मानव का जन्म हीरे की तरह से है, जितना तराशा जायेगा उतना ही निखरता जायेगा । जो काँच होते हैं वे तराशने पर बिखर जाते हैं।

''आज और कल''

जो आज तुम्हें कोपलें दिखाई दे रही हैं वे कल हरे पत्तें होगे । जो कलियाँ दिखाई दे रही हैं वे फूल बन जायेंगी । हरे पत्तों को कल निश्चित ही पीला होना है और पीले पत्ते तो हवा के एक झोके से अलग जो जायेंगे । कोंपल ही हरा पत्ता बनेगी अपने यौवन पर इठलाती हुई वृद्ध अवस्था में पीले पत्ते बन जायेगी, मृत्यु की गोद में सोने की तरह न जाने कब अलग हो जायेगी । किन्तु पीले पत्तों के अलग हो जाने से वृक्ष पत्तों से हीन नहीं हो जाते कालान्तर में उस पर हरे पत्ते व फूल आते हैं। कली, पुष्प और फलों का सिलसिला भी ऐसे ही चलता है। पतझड़ की तरह हुई मेरे हालातों पर हँसो मत । आज नहीं तो कल ये बदल जायेंगे, जीवन में बसन्त बहार लायेंगे किन्तु इसे देख अपनों के चेहरे बदल जायेंगे ।

''विघ्नों पर विजय – महापुरुष''

दुनिया का नियम है आगे बढ़ने वालों को पीछे से आवाज लगाकर रोकना, जो अच्छे काम के लिये संकल्पित हो उसका उपहास उड़ाना, कार्य करने के लिये तत्पर हो तो विघ्न बाधा पैदा करना, मंजिल पर पहुँचने की तैयारी में हो तो नीचे गिराने का प्रयास करना। दुनियाँ के इस स्वभाव को कोई बदल नहीं सका । दुनिया चाहे हँसी या निंदा की, चाहे विघ्न बाधा पैदा किये किंतु जिसने दुनिया की परवाह नहीं की वो ही व्यक्ति आत्म खुशी, विशेष उपलब्धि को प्राप्त कर सका । वही आदर्श स्थापित कर सका है। जिसने भी इतिहास रचा है प्रारम्भ में विरोध ही सहा है। जिसको दुनियाँ ने कहा कि ये हो ही नहीं सकता उसको करके दिखाना ही महापुरुष की विशेषता रही है। जीवन का शाश्वत सत्य भी यही है।

60 ''आलसी नहीं काबिल बनें''

जीवन में आलसी व्यक्ति हमेशा अभावों की गिनती करता रहता है, कभी कहता है आज पैसा नहीं, आज मेरे पास साधन नहीं, कभी मेरे पास सहयोगी नहीं तो कभी मेरे पास सामर्थ्य नहीं, मुझे तो ऐसा लगता है उसे कार्य करने की समझ नहीं यदि समझ होती तो समय के रहते सब कुछ कर सकता है। समय निकलने पर पैसा, साधन, सहयोगी, सामर्थ्य व समझ सभी व्यर्थ हैं। कुछ व्यक्ति कहते हैं काश मेरे पास पैसा होता तो मैं एक काबिल आदमी होता । पैसा कहता है जो काबिल होगा उसी के पास जाऊँगा । आलसी कहता है पैसा हो तो कार्य करूँ पैसा कहता है तू काम कर मैं पास आने को तैयार हूँ।

61 ''मरने के पहले या बाद''

दुनियाँ में जिस किसी ने भी जन्म लिया है उसकी मृत्यु नियामक है कोई राजा बनके मरता है तो कोई रंक। कोई कंस बनके मरता है तो कोई राजहंस, कोई संत बनके मरता है तो कोई पंक बनके, कोई चोर- डाकू बनके मरता है तो कोई साधु, संन्यासी बनके, कोई पुण्यात्मा बनकर मरता है तो कोई पापात्मा, कोई मरने के पहले ही मर जाते हैं तो कोई मरने के बाद भी जीते हैं, किसी की जीते जी पूजा होती है किसी की मरने के बाद, किसी की जीते जी निंदा होती है किसी की मरने के बाद। मरने के बाद निंदा पानी है तो धोखा देकर मरो, मरने के बाद प्रशंसा पानी है तो गुप्त में किसी के लिये अच्छा काम करके मरो या फिर अजर अमर होने के लिये ऐसा कुछ लिखो जिसे दुनियाँ हमेशा पढ़ती रहे या ऐसा काम करके मरो जिसे दुनियाँ लिखती रहे ।

62 "खोज पूरी"

हो सकता है खोजने पर भी संसार में तुम जितना अच्छा आदमी चाहते हो वो तुम्हें ना मिला हो, तब भी घबराना नहीं वैसे आदमी तुम स्वयं बनने की कोशिश करना, हो सकता है तुमको पाकर के अनेक व्यक्तियों की खोज पूर्ण हो जाये और तुम भी अपने आप को स्वयं के प्यार के काबिल पा सको। दूसरों का अच्छा बनना तुम्हें अच्छा बना पाये या न बना पाये किन्तु तुम्हारा अच्छा बनना दूसरों के अच्छे बनने के काम आ सकता है और तुम्हें दुर्गति से बचाकर सुगति का पात्र बना सकता है इसीलिये अच्छे बनने का उपदेश मत दो बल्कि अच्छाई के क्षेत्र में खुद ही प्रवेश करो, पुष्प स्वयं सुगंधित होकर ही सुगंध दे पाता है और मोमबत्ती भी स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश।

63 "बोलने से खामोशी श्रेष्ठ"

अगर तुम्हारी फितरत है बहुत ज्यादा बोलने की तो मेरा मिजाज भी है खामोशी से रहने का। तुम्हारे बोलने में किसी की निंदा अपमान व तिरस्कार नहीं है तो सच मानो मेरी खामोशी में भी किंचित् भी गरूर नहीं है, तुम पूछोगे कि मैं खामोश क्यों रहता हूँ तो इसका भी एक कारण है वह बाद में बताऊँगा पहले तो ये बताओ क्या जितना और जो - जो बोलना चाहते हैं, उतना और वह सब कुछ बोलकर बता पाये हो और जीवन भर भी बोलो तो क्या बता पाओगे यदि हाँ तो मैं कहूँगा मैं इसीलिये खामोश हूँ जो तुम बोल के बता सकते हो उसे मैं बताना नहीं चाहता । यदि कहोगे नहीं, तो मैं उसे बताना चाहता हूँ जो तुम आज तक बोलकर नही बता पाये । हर प्रश्न में खामोशी की शक्ति बोलने से ज्यादा रही है इसे कभी मत भूलना ।

64 ''वक्त बलवान''

लहरें केवल सागर मे ही उठती हैं ऐसा नहीं है, वे नदी, झील व तालाबों मे भी उठती हैं छोटे से जलाशय में भी उठती हैं और उन लहरों से जितना आनन्द सागर को आता है उतना ही आनन्द जलाशयों को भी आता है। चार मन गन्ना खाकर तृप्त होने वाला हाथी चार कण शक्कर से तृप्त नहीं हो सकता किंतु क्या चार शक्कर के दाने से चींटी भी तृप्त नहीं होती? यथेष्ट और पर्याप्त भोजन मिलने पर तृप्ति तो सबको होती है। आज तेरा वक्त है, जिसमें तू अनुरक्त है देखना कल मेरे नाम का ऐसा दौर आयेगा जिसमें मैं और तू नहीं सारा नगर भी शोर मचायेगा। विश्वास रख हिम्मत से काम ले।

65 ''उद्यमशीलता''

जिस भूमि पर गुलाब नहीं उगाये जा सकते क्या उसमें गेंदा उगाना भी छोड़ दें? जहाँ गेहूँ पैदा नहीं हो सकते क्या उसमें चना उगाना भी छोड़ दें? जहाँ जिस दलदली भूमि में धान पैदा नहीं हो सकता तो क्या वहाँ गन्ना नहीं पैदा करना चाहिये? जिस तालाब में सिंघाड़े पैदा न हों तो क्या वहाँ कमल भी न उगायें? जो आटा मोटा होने से रोटी न बन पाये तो क्या उसको दलिया भी न बनायें? लपसी मे पानी ज्यादा हो जाये तो हलवे में क्या हर्ज है? जिस फटे दूध की चाय नहीं बन सकती तो पनीर बन सकता है। जिस भूमि में हल चलाते - चलाते फसल न आये तो उसमें से जल तो निकाला जा सकता है इसी तरह तुम यदि वकील न बन सके तो क्या हर्ज है अच्छे किसान तो बन सकते हो? तुम्हारा बेटा यदि सॉफ्टवेयर इंजीनियर नहीं बन पाये तो कोई बात नहीं मैकेनिक ही रहने दो। इनका अर्थ है सोच सकारात्मक बनाओ निरुद्यमी कभी सफल नहीं हो सकते उद्यमशील को कोई असफल नहीं कर सकता।

66 कैसे निभायें रिश्ते

हमारी दृष्टि में जो गलत है हम चाहते हैं कि वो हमसे गलती की माफी माँगे चाहे वह गलत हो या नहीं । क्योंकि इसे हम अपनी दृष्टि से देख रहे हैं। सामने वाले के दृष्टिकोण से देखें तो उसे हाथ जोड़ कर माफी माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है। गृहस्थी, रिश्ते निभाने के लिये दीवाल जैसे मजबूत सिद्धान्त बनाने की आवश्यकता नहीं अपितु पक्षी की तरह यथा सम्भव पर हिलाने की आवश्यकता है या हवा का रुख देखकर ही उडावनी करने की आवश्यकता है। सिद्धान्त हमें कठोर बनाते हैं। रिश्ते लचीले व्यक्ति ही निभाते हैं। रिश्तों के लिये पर्वत से कठोर मत बनो सागर से तरल बनो जिससे कि मछली के गमन आगमन की तरह यथासम्भव रिश्ते निभा सको । किसी ने ठीक ही कहा है –

इस तरह मैं अपने उसूल तोड़ लेता हूँ ।
गलती सामने वाली की भी हो फिर भी हाथ जोड़ लेता हूँ।

67 ज्ञानी अज्ञानी

दुर्जन व्यक्ति वह है जो बेवजह दूसरों को छेड़ता है और सज्जन व्यक्ति वह है जो कभी किसी को नहीं छेड़ता। संत पुरुष वह है जिसे कोई कितना भी छेड़े फिर भी वह उसका उत्तर अशुभ रूप में नहीं देता, जब भी उत्तर देगा शुभ रूप ही देगा अथवा नहीं देगा । भगवन्त वह है जिसके साथ कोई छेड़छाड़ कर ही नहीं सकता। मैं उसे अज्ञानी मानता हूँ जो ईंट का जबाव पत्थर से देने को उतारू हो जाता है। मेरी दृष्टि में बुद्धिमान वह है जो अपनी निंदा, बुराई, छल, कपट अपने साथ हुआ धोखा, बगावत, खिलाफत आदि का उत्तर स्वयं न देकर वक्त पर छोड़ देता है।

तरीके अलग अलग

जिस जल की बूँद से धूल की कीचड़ बनती है उसी से वह धुलती भी है। जो पैसा आपको नरक ले जा सकता है वह स्वर्ग भी पहुँचा सकता है। वस्तु एक है उपयोग करने के तरीके अलग -अलग। जो व्यक्ति अपनी वस्तु की उत्तम सुरक्षा करता है उसे हानि व परेशानी का मुँह नहीं देखना पड़ता, हमे सुरक्षा अपनी पीठ की करना चाहिये कहीं कोई शाबाशी देने के स्थान पर खंजर न घोंप दे ।

''चालाकी से मात्र पतन''

संसार में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो अपनी चालाकी से दूसरों को अपने जाल मे फँसा लेते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो अपनी चालाकी से दूसरों के जाल में फँस जाते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जो दूसरों को अपने जाल में फँसा नहीं पाते पर उनके जाल मे फसते भी नहीं, तो कुछ ऐसे भी हैं जो दूसरों को फँसाने के साथ-साथ खुद भी नियम से फँस जाते हैं। कुछ लोग ये समझते है कि मैं उनकी चालाकी नहीं जानता किन्तु मैं बड़ी खामोशी के साथ अपनी निगाहों से उन्हें उसी प्रकार गिरते हुये देखता हूँ जिस प्रकार आँख से आँसू और आकाश से पानी की बूँद ।

70 सच्चा मित्र

तुम अपना सच्चा मित्र किसे कहते हो ? उसे ही न जो दुःख मे सदैव साथ रहे और खुशी में तब साथ रहे जब साथ रहने से खुशी बढ़े। किन्तु जो केवल खुशी में साथ रहते हैं और दुःख में साथ छोड़ देते हैं, वृक्ष पर लगे पत्तों की तरह से ऐसे मित्रों से कौन मित्रता करना चाहेगा ? अथवा जो आपसे प्रेम नहीं करता बल्कि आपका उपयोग करता है वह सच्चा मित्र नहीं। यदि तुम्हें सच्चा मित्र बनना है तो किसी भी प्राणी के बुरे वक्त में सदैव सहयोगी बनने की कोशिश करो किन्तु उससे हमेशा सावधान रहना जिसका वक्त नहीं नीयत बुरी हो ।

71 ''एकाक्षी, एकमुखी'

कहा जाता है एक मुखी रुद्राक्ष और एकाक्षी श्रीफल मांगलिक व महत्वपूर्ण होते हैं। इनका संसार में मिलना बड़ा दुर्लभ है, हॉ असम्भव नहीं । किन्तु मैं मानता हूँ इनसे ज्यादा महत्वपूर्ण व अत्यन्त दुर्लभ एक मुखी और एकाक्षी इंसान का मिलना है। एक मुखी का अर्थ है सत्यवादी व सत्यनिष्ठ, प्राण जाने पर भी वचनों को न छोड़े, एकाक्षी का अर्थ है सबके प्रति समता भाव धारण करने वाला एक नजर से सबको देखने वाला व राग - द्वेष - मोह से रहित, वह है वीतरागी व केवलज्ञानी।

72 ''सार्थक शब्द''

कुछ शब्द बड़े काम के होते हैं उन्हें हम प्रयोग तो करते हैं किन्तु शायद सही अर्थ नहीं जानते जैसे आस्था, विश्वास, आशा, प्यार , नजरिया व आत्मविश्वास ।

आस्था - मूर्ति में भगवत्ता के दर्शन ।

विश्वास - मैं औषधि से ठीक हो जाऊँगा ।

आशा - भोगों में सुख मिलेगा ।

प्यार - जिसे मैं चाहता हूँ वो सर्व सुन्दर है।

नजरिया - गिलास आधा भरा है या आधा खाली ।

आत्मविश्वास - बीज से वृक्ष की यात्रा ।

73 ''मूल्यांकन''

संसार में हर वस्तु का मूल्य नहीं आंका जा सकता, कुछ ही वस्तु ऐसी हैं जिनका मानव मूल्यांकन कर लेता है किन्तु वह भी हमेशा नहीं हर जगह नहीं। क्या तुम मित्र की सच्ची दोस्ती का, माँ के निश्छल वात्सल्य का, बहन के सच्चे प्यार का, भाई के सहयोग का, पिता के लाड का, पत्नी की प्रीति का, भक्त के समर्पण का, वेदना में उत्पन्न दुःख का, यथेष्ट वस्तु की प्राप्ति पर उपलब्ध आनंद का, स्वच्छन्द प्रवृत्ति के आभास का, निर्धनता की भूख का, पराधीनता या गुलामी की सजा का मूल्य बता सकते हो? ये सब अनुभूतियाँ हैं इनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। क्या तुमने कभी वृक्षों को छाया, नदी को जल, सूर्य को धूप, दीपक को प्रकाश, चन्द्रमा को चांदनी, वायु को ऑक्सीजन (श्वाँस)बेचते देखा है?

74 उपयोगी दो शब्द

जीवन मे आगे बढ़ने के लिये आपने बहुत सारी बातें सुनी हैं, पढी हैं, देखी हैं जैसे अहम-वहम को छोड़ो, सब पर रहम रखो, पाप- अभिशाप से बचो, जाप करो, अनचाहा खाओ मत, मनचाहा बोलो मत, जिनचाहा करो। इसी तरह ये दो शब्द भी उपयोगी हैं निंदा व नींद को जीतो किन्तु सपनों व अपनों से हार जाओ, भक्ति व सूक्ति में विवेक रखोगे तो मुक्ति की युक्ति पा सकोगे, डरो मत और गिरो मरो मत, सुधरो और तरो ।

75 सुन्दर कौन ?

Duty वाले व्यक्ति जब इमानदारी से Duty करते हैं तो वो ही Beautiful माने जाते हैं मात्र Beautiful से कोई Dutyful नहीं होता। कर्त्तव्य धर्म है उसका पालन करने वाला ही सर्व सुन्दर है वही सत्य है शिवत्व का अधिकारी है। किन्तु जो शरीर से अपने आप को सर्वसुन्दर मानता है वह भ्रम के गहनतम में दबा है ऐसा व्यक्ति सुन्दर कार्य करके सुन्दर व्यक्ति बनना नहीं चाहता, सुन्दर व्यक्ति वह है जो सुन्दर कार्य करे, सुन्दर वचन बोले, सुन्दर विचार करे सुन्दर देखे, सुन्दर सुने, इसके बिना संसार में कोई सुन्दर नहीं हो सकता ।

76 ''न्याय या निर्णय''

जहाँ इंसाफ होता है वहाँ गुनाह माफ होता है। इंसाफ का अर्थ क्या समझते हैं न्याय या निर्णय आप कुछ भी समझे इससे कोई गिला नहीं । किन्तु हम इंसाफ का अर्थ इस प्रकार भी लगा सकते हैं। इन का अर्थ अन्दर और साफ का अर्थ clear (शुद्ध) जिस न्याय व निर्णय से मन शुद्ध हो जाये तभी वह सच्चा इंसाफ माना जा सकता है। जिस इंसाफ से दोनों मे दीर्घकाल के लिये बैर हो एक दूसरे को बर्बाद करने की ठान लें तो इंसाफ कैसा। प्रकृति सदैव यथार्थ इंसाफ करती है किन्तु गुनाह माफ नहीं करती है।

77 हितार्थी

जो व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में अपना हित करने में समर्थ है उसके लिए कोई भी परिस्थिति उसके हित के मार्ग में बाधक नहीं बन सकती। जो व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में अपना हित करने में असमर्थ है उस व्यक्ति का कोई भी व्यक्ति हित नहीं कर सकता। जो फटे दूध का पनीर बनाना जानता है, टूटे हुए दीवार में खिड़की दरवाजे लगाना जानता है, बरसते पानी में नहाना जानता है, खिलती धूप में कपड़े सुखाना जानता है, शत्रु के सामने परिणामों में समता रखना जानता है, मित्र का हित करना जानता है, गरीबी में निर्धन आकिंचन व्रत का पालन करना जानता है, अनाथ होने पर एकत्व भावना भाना जानता है उसे हित से कौन रोक सकता है।

78 ''अहम् और वहम''

जो अपने ऊपर और दूसरों के ऊपर रहम करने में समर्थ है वह अपने ऊपर या दूसरों पर अत्याचार नहीं कर सकता, वह अन्याय, अनीति, पाप, व्यसन, निंदा, बुराई और अपयश या किसी का अहित करने में सहम - संकोच कर जाता है। अपने पर रहम करने वाला व्यक्ति दुःख के कारणों में सहम जाता है वह कभी भी अहम् (अहंकार) और वहम (भ्रमबुद्धि) में नहीं जीता क्योंकि वह जानता है कि अहंकार जीवन पथ में अंधकार का काम करता है और अधोपतन का कारण है और वहम आत्मा को मलिन करता है एवं अनन्तकाल तक संसार में चक्कर लगवाता रहता है। भ्रमबुद्धि मिथ्यात्व की सहचरी है भ्रम में जीने वाला कभी सत्य व आत्महित को प्राप्त नहीं कर सकता।

79 ''उचित मूल्यांकन''

प्रायः करके व्यक्ति जीवन में उठना तो चाहता है किन्तु हर व्यक्ति इतना नहीं उठ पाता जितना उठना चाहिये। वह कद व पद के अनुरूप बड़ा होना चाहिए, कद व पद मद के कारण हैं किन्तु जो अपनी हद में रहकर बढ़ना चाहता है वह वास्तव में बड़ा होता है। हम इतने ऊँचे उठे कि हमारे सामने कोई बैठा न रह जाये, हम इतने विनम्र व लघु बनें कि हमें किसी के साथ बैठने मे संकोच न हो। हीरा कॉच व सोना दोनों के बीच हीरा ही होता है भले ही आज कोई उसका सही मूल्यांकन न कर पाये, अल्प मूल्यांकन होने पर भी हीरा, हीरा ही रहेगा काँच न हो जायेगा।

80 ''आत्मविश्वासी ही कामयाब''

कामयाबी प्राप्त करने के दो तरीके हैं, पहला कामयाब व्यक्तियों की सेवा करके और उनके पैरों में गिरकर कामयाबी की भीख माँगना। किन्तु यह तरीका अत्यन्त कठिन है, किंचित भी कामयाबी हासिल होने पर विनम्रता, श्रद्धा, समर्पण व सम्मान का भाव टिक नहीं पाता। दूसरा मार्ग है स्वयं के पैरों से चलकर आगे बढ़ना। इस मार्ग में भी प्रतिकूलतायें, बाधायें या कठिनाईयाँ आती जरूर हैं किन्तु आत्मविश्वासी के सामने वे टिक नहीं पाती, आत्म विश्वासी पहाड़ जैसी मंजिल को भी अपने पैर के नीचे दबा सकता है और सागर जैसी दुस्तीर्ण मंजिल को भी सहजता से पार कर लेता है।

81 ''सहजानन्द सहजता से प्राप्त''

जिन्दगी बहती हुई नदी की धार की तरह है, पीछे छोडे हुए मार्ग की ओर तो कभी मुड़ती ही नहीं यदि नया रास्ता प्राप्त करना है तो चट्टानों से लड़कर ही नया रास्ता बनाना पड़ेगा। जीवन में अच्छाईयाँ प्राप्त करने के लिए बुराईयों से लड़ना जरूरी है, मित्रों को पाने के लिए शत्रुओं को छोड़ना जरूरी है, शत्रुता को छोड़े बिना मित्रता का आनंद नहीं आता। जीवन में सहजानन्द प्राप्त करना है तो न क्रान्ति की आवश्यकता है, न मुडने की बस सहजता की धारा में बहना सीख जाओ, किसी व्यक्ति, बात व वस्तु को न अच्छा मानो न बुरा, जो मिला है उसी मे आनंद खोजो ।

82 "आगे बढ़ने का मार्ग"

जीवन मे यदि आगे बढ़ने का जुनून है तो उन बातों की परवाह कभी मत करो जो आपके सम्मान में निंदा युक्त कही जाती हैं निश्चित मानिये जो आपकी निंदा कर रहे हैं वो आपसे बहुत पीछे हैं आगे वाला कभी पीछे वालों की निंदा नहीं करता, पीछे वाला ही जब आगे बढ़ने में असमर्थ होता है तब उसकी निंदा का मार्ग उसे अपने मन के सन्तोष हेतु पकड़ना पड़ता है । चलते हुए हाथी को देखकर श्वान आगे से नहीं पीछे से भौंकते हैं किन्तु जो वास्तव में हाथी है उसकी गति श्वान के भौंकने से कभी निरुद्ध नहीं होती, यह सत्य है जिसमे कोई विशेष बात होती है लोग उसी की पीठ पीछे बात करते हैं वह चाहे निंदा रूप हो या प्रशंसा रूप ।

83 "अति समझदार से सावधान"

ज्यादा समझदार और मूर्ख लगभग एक तरह के ही होते हैं क्योंकि दोनों ही सामान्य व्यक्ति की बुद्धि के परे हैं, मूर्ख कुँए के तल की तरह हैं जिसमें गमन करके मंजिल नहीं पाई जा सकती, ज्यादा समझदार उस ठूंठ की तरह से हैं जिस पर गमन करना सम्भव नहीं। यदि मूर्ख व अति समझदार को समझाने की कोशिश की तो स्वयं का पतन ही नियामक है, मंजिल की प्राप्ति तो असम्भव ही समझो। मध्यम बुद्धि वाले व्यक्ति सदा तुम्हारे काम आते हैं, आते रहेंगे और आप भी मध्यम बुद्धि वाले व्यक्तियों का हित करने में समर्थ हो सकते हो, गाडियाँ पुल पर चलती हैं नीचे नहीं और हवा में भी नहीं ।

84 ''गुणों की प्रशंसा शत्रु भी करता है''

तारीफे काबिल कला तो तभी मानी जायेगी जब हम अपना कला - कौशल दिखा रहे हों तब भी लोग प्रशंसा कर रहे हों, दिखाने के बाद जिसे भूल न पायें, दिखाने से पहले जिसका बेसब्री से इन्तजार किया जाता हो। जिस कला या हुनर की प्रशंसा प्रतिद्वन्दी व शत्रु भी करें तब समझ लेना आपकी कला श्रेष्ठ है। संसार में यूँ तो चापलूस प्रशंसकों की भी कमी नहीं किंतु चापलूस कभी भी तुम्हारे यथार्थ गुणों की प्रशंसा नहीं करते वे तो अपने स्वार्थ की सिद्धि करने के लिए दोषों की भी प्रशंसा करते हैं इतना ही नहीं वे दोषों की प्रेरणा देकर तुम्हें दोषों के गर्त में गिराकर ही अपना स्वार्थ सिद्ध करके चैन की साँस लेते हैं।

85 ''जुबान - घातक या वरदान''

आज जवानी में आकर अपनी जुबान की ताकत को उन माता - पिता पर मत आजमाओ जिन्होंने तुम्हें बोलना सिखाया। यह जुबान तलवार की तरह से है जब इसका प्रहार अपनों पर किया जाता है तो अपनों का कतरा - कतरा बिखर जाता है और उसी जुबान का प्रयोग जब गैरों से अपनों की रक्षा के लिये किया जाता है तब अपनों का रोम - रोम निखर जाता है। जबान रूपी तलवार को प्राप्त करना तो आसान है किन्तु सदुपयोग करना कठिन। जो सैनिक रूप जवान अपनी तलवार रूपी जुबान का प्रयोग अपनी सेना रूपी रक्षकों पर करता है वह पृथ्वी कर कलंक है और जो धर्म के भक्षकों पर संस्कृति की रक्षा के लिए करता है वह वरदान स्वरूप है।

86 "स्नेह से विश्वास मजबूत"

विश्वास दीवार पर चिपका दिये इश्तहार की तरह है एक बार छूट गया तो दोबारा चिपकना मुश्किल ही होता है यदि कदाचित् चिपक भी गया तो वह हवा के किसी भी झोके से कभी भी कहीं भी गिर सकता है, इसीलिए विश्वास के धागे में स्नेह की स्निग्धता सदा बनाकर रखो, स्नेह की स्निग्धता के बिना धागा रूपी विश्वास जीर्ण - शीर्ण होने लगता है तब उसे टूटने में क्षणभर भी नहीं लगता ।

87 "परखो मत समझो"

संसार मे प्रायः देखा जाता है किसी भी वस्तु की प्रमाणिकता उसकी परीक्षा के बाद ही मिलती है। चाहे लैब टैस्ट हो (रत्नादि), चाहे अग्नि में तपा कर (स्वर्णादि), चाहे C.A से Auditing (Account)। चाहे Dr. से प्रमाणित कराये जाये (certificate) अथवा स्कूल में अध्यापक के द्वारा परीक्षा साधक को प्रमाणित किया जाये या बिम्बों को प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा प्रमाणित किया जाये । परीक्षा के बिना प्रस्तुत की गयी प्रमाणिकता भी अप्रमाणिक ही होती है। किन्तु व्यवहार जगत् में कुछ ऐसे रिश्ते-नाते, सगे सम्बन्धी भी होते हैं, जिन्हे बिना परीक्षा के भी स्वीकार करना होता है। यदि उन अपनो की परीक्षा ली जाये तो सम्भव है वे पराये से भी बदतर निकलें और अपनी भावनाओं की कसौटी पर परख कर देखिये तो सम्भव है संसार में कोई पराया नहीं है किसी ने ठीक ही कहा है-

परखो तो कोई अपना नहीं
समझो तो कोई पराया नहीं ।

88 खुद को देखो

जो कोई भी व्यक्ति अपने निंदकों को पराजित करने के लिये अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है। वह जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाता वह तो उसकी तरह मूर्ख है जो अपने पद चिह्न मिटाने को उल्टा चल रहा है या नसैनी चढ़ने के लिये नीचे वाली पैढी काट रहा हो । लक्ष्य की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर चलने वाले व्यक्ति कभी निंदकों या प्रशंसकों की परवाह नहीं करते । क्या स्वाभिमानी हाथी ने कभी मार्ग में चलते समय भौंकने वाले कुत्तों के साथ युद्ध किया है? क्या आकाश में उड़ने वाले राजहंस पक्षी ने अपनी परछाई पकड़ने वाले बच्चों को कभी लहू लुहान किया है या आकाश की ओर बढ़ने वाले वृक्ष ने खुद से लिपटी लता को उखाड़ फैंका है? यदि नहीं तो आप अपने निंदकों / प्रंशसकों की परवाह क्यों करते हो?

89 समझो – समझ को

जीवन में नया रास्ता प्राप्त करने के इच्छुक महानुभाव अपने जीवन से ही लड़ते हैं। अपने जीवन में क्रान्ति पैदा करते हैं कभी भ्रान्ति से युक्त हो शान्ति की खोज करते हैं। कभी नीचे पड़ते हैं तो कभी आगे बढ़ते हैं। जीवन की राह तो बदल जाती है किन्तु यह जरूरी नहीं कि जीवन बदल ही जाये । दूसरों का जीवन संभालने का दम भरने वाले भी कई बार फिसलते देखें हैं। दूसरों को समझाने वाले खुद की नासमझी से झूझते देखे हैं। यदि जीवन को आसान, महान्, गुणवान और भगवान् जैसा बनाना हो तो अपने जीवन को समझदारी से समझो । स्वयं की समझ को अच्छे से समझे बिना जीवन में कुछ भी समझ पाना संभव नहीं है।

90 अच्छे व्यक्ति

संसार में अच्छे व्यक्ति व अच्छी पुस्तकों का अभाव नहीं है, हाँ उनकी मात्रा अल्प जरूर है। अच्छी पुस्तकें और अच्छे व्यक्ति खोजने पर ही मिलते हैं। बिना खोजे यदि मिल जायें तो हमें वे अच्छे नहीं लगते । इनकी दूसरी विशेषता ये भी है कि ये जल्दी समझ नहीं आते क्योंकि ऊपर से सामान्य अन्दर से विशेष होते है। इन्हे अपनी विशेषता दिखाना अच्छा नहीं लगता । अच्छे व्यक्ति व अच्छी पुस्तकें यदि किसी को मिल जायें तो भी यावज्जीवन स्मृति पटल से बाहर नहीं निकलती, हर अनुकूल व प्रतिकूल अवसर पर स्वतः ही स्मृति में आ जाती है। मैं तो सोचता हूँ किसी को अपना पता, निवास, नाम - फोन न. से नहीं बताओ अपितु वह आपको आपकी अच्छी विशेषता से याद रखे ऐसे बनो । यह गुणों को प्रकट किये बिना सम्भव नहीं है।

91 परोसे स्वादिष्ट शब्द

तुम दूसरों को भेंट में अच्छे आभूषण वस्त्र देते हो सुगन्धित फूल माला (गुलदस्ते) देते हो, जो देखेने में अच्छे लगें ऐसे वर्ण युक्त अनेक पदार्थ देते हो । किसी को खिलाने हेतु उत्तम स्वादिष्ट मिठाई परोसते हो तब तुम यह क्यों भूल जाते हो कि शब्दो में भी स्वाद होता है। भोजन परोसने से पहले महिला उसे चख लेती है पुनः स्वादिष्ट बनाकर ही परोसती है। क्या हमें भी शब्द परोसने के पहले उनका स्वाद नहीं लेना चाहिए ? यदि शब्द शुद्ध चखकर परोसेंगे तो सम्भव है जिनका स्वाद अच्छा नहीं लगता आप उन्हें दूसरों को न परोसे ।

92 समय की करवट

करवट बदलने से जो आपके सम्मुख है वो पीछे और पीछे वाला सम्मुख हो जाता है। समय की करवट बदलने से मूर्ख से विद्वान व विद्वान से मूर्ख हो जाता है। सुन्दर से कुरूप और कुरूप से अति सुन्दर, दातार से याचक और याचक से दातार, वन्दनीय से निन्दनीय और निन्दनीय से वन्दनीय । पैर की ठोकर खाने वाली रज सिर पर और सिर पर रखा ताज पैरो में ठोकर खाता दिखता है। समय की करवट को कोई नहीं जानता कब कैसे कौन सी करवट ले समय की करवट को जानने के लिये अनेकों ऋषि, मुनि, संत, साधु, ओझा, ज्योतिषि, विद्वान, शास्त्री, शास्त्रों का अध्ययन करते मृत्यु की गोद में सो गये किन्तु समय की करवट को न जान सके । दूसरों की भविष्यवाणी करने वाले स्वयं के समय की करवट को न जान सके अतः तुम सभी अपने कर्त्तव्य का पालन करो । समय के करवट लेने में कोई ज्यादा समय नहीं लगता ।

93 सपना

सपना देखने के लिये सोना जरूरी है किन्तु पूरा करने के लिये जगना । रोज सपने देखने वाले को पागल कहते हैं किन्तु जो अपने द्वारा देखे अच्छे सपने को पूरा करने में समर्थ होते हैं, बुद्धिमान लोग भी फिर उन्हीं से अपने जीवन का दिशा निर्देश चाहते हैं। शंकित व्यक्ति बड़ा सपना देखने में भी डरता है किन्तु निशंक निर्भीक अदम्य साहसी एवं पुरुषार्थशील बड़े से बड़े सपने को पूरा करने में भी भयभीत नहीं होते । उनके मुख से सहजता में निकली बात भी दूसरों के लिये सपना कहलाती है। जब वे मंजिल पर पहुँच जाते हैं तब उनका उपहास बनाने वाले भी उनके प्रथम अनुयायी बन जाते हैं। आप भी घबराओं मत हिम्मत से काम लो । आत्म विश्वास को जागृत करो अच्छे सपने देखो और उन्हें पूरा करो क्योंकि मंजिल बहुत देर से आप जैसो की बाढ़ देख रही है।

94 बनना है तो ऐसे बनो

जो कोई व्यक्ति पीठ पीछे आपकी निंदा करता है ईर्ष्या करता है विद्वेष की भावना करता है या आपके विरुद्ध किसी को भड़काता है या आपको नष्ट करने के लिये षडयंत्र रचता है तब निश्चित मानिये वर्तमान में आप उससे आगे हैं। वह सामने से आपका मुकाबला नहीं कर सकता है किंतु यह सोचकर कि मैं उससे आगे हूँ बलवान हूँ मेरी सामर्थ्य अधिक है आलसी मत बनो लापरवाह मत बनो, अकुशलता के साथ किसी कार्य का सम्पादन मत करो क्योंकि व्यक्ति जब भी पराजित होता है अपनी ही भूल के कारण होता है। अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाओ कि लोग पीठ पीछे आपकी प्रशंसा करें आपको दिल में बसाना चाहें, शुद्ध मन से आपका स्मरण करें।

95 सफलता

जीवन में जिसने भी सफलता का शिखर छूआ है वह परीक्षाओं की सीढ़ियाँ पार कर ही वहाँ पहुँचा है। स्वर्ण अग्नि में तपाने पर ही शुद्ध होता है जल से धोने से नहीं। उसे पीटकर ही निकाला जाता है चूम कर नहीं। पुष्प काँटों पर खिलते हैं सेजों पर नहीं। हीरे में चमक तराशने पर आती है पुष्पों के बीच नहीं। मेंहदी घिसने पर ही रंग दिखाती है सोकेस में बंद रखने पर नहीं। संघर्षों की अग्नि में जलने वाला इन्सान कुन्दन की तरह शुद्ध हो जाता है। मुझे ईश्वर में विश्वास है वह मुझे कभी अनुत्तीर्ण नहीं होने देता, दुर्भाग्य ने मेरी कितनी ही बड़ी कड़ी से कड़ी परीक्षा क्यों न ली हो। यदि आप भी अपने जीवन में उत्तीर्ण होना चाहते हो तो अपनी आत्मा और परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखो, इनके बताये मार्ग पर ही चलो। जो आत्मा की आवाज सुनने में असफल है वो आत्मा भी परमात्मा के उपदेश का पालन करे, इन दोनों की आवाज कभी मिथ्या नहीं होती।

96 समय पर उपचार

वे पेड़ ओस बिन्दु और कभी - कभी होने वाली वर्षा से आज तक हरे भरे रहे किन्तु कुछ दिनों पहले सूर्य के प्रचण्ड ताप और पश्चिमी हवा ने झुलसा कर खाक कर दिया। वे पौधे और कोई नहीं वर्तमान की युवा पीढ़ी है जो अपने माता - पिता के संस्कार रूपी ओस बिन्दु और महापुरुषों के जीवन चरित्र रूपी कभी - कभी होने वाली वर्षा से हरित - भरित पल्लवित -पुष्पित और फलित भी थे किन्तु क्रोधरूपी सूर्य के प्रचण्ड ताप और अहंकार, असहिष्णुता की पाश्चात्य (पश्चिमी) हवा ने आज युवा पीढ़ी का जीवन जिस तरह तहस - नहस किया है पूर्वजों ने कभी ऐसी कल्पना भी न की होगी। समय रहते पुनः ओस बिन्दु और रिम - झिम वर्षा न मिली तो इनके सुखद जीवन को बचाना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो जायेगा। समय पर किया छोटा उपचार भी समय निकलने पर किये बड़े उपचार से श्रेष्ठ होता है।

97 एक दर्पण ऐसा भी

दर्पण में चित्र है नहीं पर दिखता है, अमीरी में हमारा कोई मित्र है नहीं किन्तु हर एक मित्र सा दिखता है। जब स्वयं की नासिका सुगन्धी से परिपूरित हो तो सामान्य जल भी इत्र सा दिखता है, जब स्वयं की नियत साफ हो तब हर एक हृदय पवित्र सा लगता है। वर्तमान के समय को अब इन दर्पणों की इतनी आवश्यकता नहीं जो केवल अपना चित्र दिखाये। आज उन दर्पणों की आवश्यकता है जिनमें हम अपना चरित्र देख सकें और उसमें लगे हुये दाग धब्बों को साफ कर सकें। आज कुछ धर्म विरोधी लोगों ने महापुरुषों के चरित्र रूपी दर्पण को खण्डित कर दिखाना शुरू कर दिया है अथवा उन्हें छुपाकर रख दिया है। पूर्वजों के चरित्र रूपी दर्पण की आज की युवा पीढी के लिये नितान्त आवश्यकता है अन्यथा उनका चरित्र रूपी चेहरा श्याम रंग से पुत जायेगा।

98 आत्मबल

मन दुनियाँ के मंतव्य के अनुसार चलने वाला ऐसा घोड़ा है कि उसे जिधर चाहो उधर मोड लो । इस बन्दर जैसे चंचल मन को खाद्य सामग्री की पोटली का लोभ देकर कहीं भी मोड़ा जा सकता है। पीपल के पत्ते की तरह चंचल मन हवा का रूख बदलते ही अलग -अलग दिशा में कम्पन करने लगता है। संगति व द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव की अनुकूलता व प्रतिकूलता मन के विचारों को, कार्य क्षमता को और उद्देश्यों को भी बदल देती है। मन तो हारने के पहले ही कितनी बार हार जाता है और जीतने के पहले भी जीत जाता है। मन का मार्ग आकाश में दिखने वाले टॉर्च के प्रकाश के मार्ग की तरह है जो दिखती तो है पर उसमें गमन नहीं किया जा सकता किन्तु आत्मबली वे कहलाते हैं जो मन के पराजित होने पर भी पराजित नहीं होते स्वयं के आत्म - विश्वास व आत्मबल से सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

99 सच्चे मित्र

धैर्य, साहस, विवेक और आत्मविश्वास जैसे मित्र आपके पास हो तब आपको जीवन में बिल्कुल भी घबराने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो बुरा वक्त आपका अन्त करने के लिये आया है वह भी तब तक आपका अन्त नहीं कर सकता जब तक चारों में से एक भी जीवित है। ये चारों मित्र एक दूसरे के लिये प्राण दान देने में समर्थ हैं अर्थात् एक - एक मित्र में तीन मित्रों को पुनर्जन्म देने की शक्ति है। इन चारों मित्रों का कहना है हमारा अन्त चाहने वाले बुरे वक्त का इरादा पूर्ण न होगा क्योंकि हमें दिख रहा है इस बुरे वक्त का अन्त करने वाला बुरा वक्त भी पीछे आ रहा है। बुरा वक्त किसी का अन्त नहीं करता हमारी बुराई ही हमारा अन्त करती है। हमारी सबसे बड़ी बुराई है इन मित्रों को भूल जाना या शत्रु मान लेना ।

100 संगति का प्रभाव

संसार में अल्प मूल्य वाली वस्तु का मूल्य तब और विशेष हो जाता है जब वह बहुमूल्य की सुरक्षा में अपने आप को बिना शर्तों के समर्पित कर दे । जो अल्प मूल्य वाली वस्तु बहुमूल्य वाली वस्तु से स्पर्धा करके खुद को बहुमूल्य सिद्ध करना चाहती है तब उसका मूल्य अल्प से भी अल्प हो जाता है क्योंकि अल्प मूल्य वाली वस्तु बहुमूल्य से स्पर्धा करके उसकी उपेक्षा का कारण बन जाती है। महान् पुरुष और महान् वस्तु से उपेक्षित पुरुष या वस्तु निःसन्देह सबकी दृष्टि में गिर जाती हैं। आप कहेंगे ऐसा कैसे उदाहरण के लिये अल्प मूल्य वाली वस्तु बहुमूल्य की सुरक्षा से किस तरह मूल्यवान् होती है, उत्तम औषधि वाली शीशी में ढक्कन, हीरों की तिजोरी में पड़ा ताला और चाबी, करोड़ों की कोठी की सुरक्षा में चौकीदार, राजा की सुरक्षा में अंगरक्षक प्रभु की सेवा में समर्पित छत्र आदि द्रव्य व प्रातिहार्य । दूसरी ओर बहुमूल्य की उपेक्षा करने वाले बिना शीशी का ढक्कन, पेड़ से टूटा पत्ता, पुष्प की रक्षा से विहीन काँटा, ट्यूब की रक्षा में टायर, हवा की सुरक्षा से रहित पन्चर ट्यूब, उँगली की सुरक्षा से रहित नाखून ।

101 वक्त वक्त की बात

बुरे वक्त में तुम किसी की बात का उत्तर मत दो क्योंकि बुरे वक्त में जो कुछ भी उत्तर दोगे तो वह गलत सिद्ध हो सकता है। तब फिर आप पूछ सकते हैं कि फिर क्या करे? नही, समय की इन्तजारी नहीं अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। आपके सभी प्रश्नों का उत्तर आपका वक्त अपने वक्त पर आकर स्वतः ही दे देगा । वक्त किसी एक का होता नहीं किन्तु एक न एक दिन आता जरूर है। तुम चिन्ता क्यों करते हो कल उसका है तो आज तुम्हारा भी वक्त होगा अथवा कल तुम्हारा वक्त था तो आज उसका वक्त है। जो वक्त को समझते हैं वो वक्त की वस्तु या व्यक्ति की किसी से कभी शिकायत नहीं करते जो शिकायतों में जीता है समझो उन्होंने अभी वक्त को समझा ही नहीं । हर वक्त हर वक्त एक जैसा नहीं होता गर होता है तो दिखता नहीं । यदि हर वक्त को हर वक्त एक सा अनुभव करना चाहते हैं तो स्वयं के समत्व के सागर में उतर जायें ।

102

''साधना की छत्र छाया''

लालसा और कामनाओं की तीव्रता विषयाभिलाषा के परिधान पहनकर वासना के रूप में प्रकट हो जाती है। सम्यक साधना यदि शुद्ध भावना के साथ की जाती है तो वह धर्म प्रभावना का रूप ले लेती है। प्रभावना के लिये की गयी साधना न केवल भावना को प्रदूषित करती है अपितु सम्यक् साधना से भी च्युत कर देती है। सम्यग साधना तो वात्सल्यमयी माँ की तरह से है और भावना उस वात्सल्यमयी माँ की स्नेहासिक्त कन्या जो तुम्हारी छोटी बहन है। सम्यक् साधना और शुद्ध भावों के साथ रहने वाला संयमी न तो कभी विकृत होता है न कभी नष्ट किन्तु प्रभावना रूपी प्रेयसी के चक्कर में पड़े कितने ही योगी रसातल में चले गये । कितने ही कामनाओं के जाल में उलझ गये, कितने ही वासना के दलदल मे फँस गये । हे परमात्मा की उपासना करने वाले भोले प्राणी! तुम प्रभावना के चक्कर में अपनी साधना रूपी माँ और भावना रूपी बहन का परित्याग न करो । सम्यक् उपासना रूपी तुम्हारी सहचरी, सहधर्मिणी व अर्धांगिनी तभी बन सकती है जब तक जिनाराधना की ज्योति तुम्हारे अन्दर प्रज्ज्वलित है। उसके बुझते ही न तुम्हारे पास साधना होगी न उपासना न शुद्ध भावना और न धर्म प्रभावना ।

103

''अन्तर- कारण और भागीदार''

संसार में कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं होता । पुण्य से पुण्य का फल तथा पाप से पाप का फल मिलता है। बबूल के बीज से बादाम नहीं मिलते और आम के बीज से बबूल नहीं मिलते । जैसा कारण होता है वैसा की कार्य । हम यदि सुख चाहते हैं तो सुख के कारणों का संग्रह करें दुःख के कारणों का नहीं, हम दुःख से बचना चाहते हैं तो दुःखों के कारणों से बचें शुभ के कारणों से नहीं । हम शुभ की आकांक्षा करने वाले दूसरों के सुख की भी कामना करें । अपने दुःखों को कम करना चाहते हैं तो दूसरों के दुःखों को बॉटना सीखें । दूसरों के सुखों में निमित्त बनना हमारी सुखाभिवृद्धि में कारण बना है। दूसरों के दुःखो में कारण बनना हमारी दुःखाभिवृद्धि का कारण बनता है। सज्जन वे कहलाते हैं जो दूसरों के सुखों में कारण तो बनते हैं किन्तु भागीदार नहीं तथा दूसरों के दुःखों में भागीदार तो बनते हैं परन्तु कारण नहीं । किन्तु दुर्जनों की प्रवृत्ति विपरीत होती है वह दूसरों के दुःखों में कारण तो बनता है भागीदार नहीं, दूसरों के सुख में भागीदार बनना चाहता है कारण नही ।

104

''मत छोड़ो शराफत''

यह सर्वमान और शाश्वत सिद्धान्त है अच्छे कार्य का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा ही होता है। ठीक है पुष्प वाटिका मे गंध पुष्प की आती है प्याज के खेत में प्याज की। किन्तु अपनी शराफत में रहने वाला व्यक्ति काँटे का प्रयोग भी अपने पैर का और दूसरे का काँटा निकालने में कर सकता है। किन्तु शराफत से गिरा हुआ व्यक्ति दूध को भी दृष्टिदोष करके पिलाता है तो जहर का काम करता है और वह दूध स्वयं के लिये भी पेय रूप नहीं बचता। नीयत नेक रखो धर्म की भावना एक रखो अपनी आत्मा जैसी ही पर की आत्मा समझो।

105

''प्रकृति के नियम''

प्रकृति के नियम शाश्वत सार्वभौमिक व सार्वजनिक होते हैं उनमें द्रव्य- क्षेत्र- काल-भाव के निमित्त से भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। व्यवहार में तो पक्षपात देखा जा सकता है किन्तु प्रकृति के नियमों में नहीं। प्रकृति के नियम उतने ही सत्य व प्रमाणित होते हैं जितनी जल की शीतलता। अग्नि के संयोग से ऊष्ण होने पर भी उसमें इतनी शीतलता है कि वह जल उसी अग्नि को भी बुझा सकता है। आप देखते हैं पुण्य के उदय में सबकुछ अनुकूल ही प्रतिभासित होता है जो अनुकूल है वो तो अनुकूल है ही कदाचित् जो प्रतिकूल है वह भी अनुकूल ही लगता है। और पाप के उदय में जो प्रतिकूल है वो तो प्रतिकूल है ही परन्तु अनुकूल भी प्रतिकूल ही लगता है। ऐसा प्रकृति का भी नियम है क्योंकि जब हम हँसते हैं तो सैकड़ों हमारी हँसी में शामिल हो सकते हैं किन्तु जब हम सिसकियाँ भरकर रो रहे होते हैं तब कोई भी हमारे पास नहीं आता। इतना ही नहीं शरीर का भी यही धर्म देखा जाता है जब आँख रोती है तो आँसू पोंछने एक अंगुली जाती है और जब खुशी में ठहाका मारकर हँसते हैं तो 32 दाँत चमकने लगते हैं तथा 10 अंगुलियाँ ताली बजाने में क्रियाशील हो जाती हैं। जब हमारे शरीर का ही ये हाल है तो दूसरों से गिला शिकवा क्यों ?

106

''स्वरूप सत्य और असत्य का''

सत्य अखण्ड है, शाश्वत है, सर्वत्र है, सबके लिये है और अनन्त है। वह व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष, समय विशेष के लिये नहीं होता । यदि मन में शंका, भय, लोभ व मोह नहीं है और तुच्छ स्वार्थों को सिद्ध करने की कामना नहीं है तो सत्य को हर समय, हर जगह, हर परिस्थिति में प्रस्तुत किया जा सकता है। सत्य तो सिंह की तरह निर्भीक होता है इसे बंधन में बाँधकर मत रखो इसे स्वतन्त्र छोड दो ।ये जहाँ भी रहेगा अपनी दहाड़ से अस्तित्व का बोध करा देगा । असत्य मरुथल में पड़ी सूक्ष्म ओस की बूँद की तरह होता है वह कदाचित् तिनके पर सूर्य की किरण से क्षण भर के लिये मोती सा चमकता दिखाई दे जाये किन्तु वह होता क्षणध्वंसी ही है। ओस की बूँद छुपाओ तब भी नष्ट होगी प्रकट कर दो तब भी अपने अस्तित्व को नहीं बचा सकेगी । स्निग्ध व वर्तिका से युक्त जो कोई भी दीपक रूपी प्राणी सत्य रूपी ज्योति का आलंबन लेगा वह अपने अस्तित्व को प्रकट करते हुये दूसरे के अस्तित्व को भी यथार्थ रूप में प्रकट करने में समर्थ होगा ।

107

''सिद्धान्तवादी बनो''

संसार में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं एक तिकोने पत्थर की तरह, दूसरे बेलन की तरह, तीसरे बिना पेंदे के लोटे की तरह और चौथे चौकोर पत्थर की तरह । प्रथम मनुष्य वे हैं जो अपने सिद्धान्तों का कट्टरता से पालन करते हैं। वे किसी भी परिस्थिति में अपने सिद्धान्तों को नहीं बदलते अर्थात् दलबदलू नहीं होते । इतना ही नहीं वे जहाँ रहते हैं उन्हें देखकर अन्य भी सिद्धान्तवादी बन जाते हैं। इस प्रकार यह पत्थर न लुढकता हैं न ही लुढकने देता है। दूसरे प्रकार के मनुष्य बेलन की तरह है जैसे बेलन स्वयं लुढ़कता तो है लेकिन लुड़काता नहीं । ये मनुष्य अवसर पाकर स्वयं तो दलबदलू हो जाते हैं परन्तु दूसरों को दलबदलू करने में समर्थ नहीं हो पाते । तीसरे प्रकार के मनुष्य बिना पेंदी के लोटे की तरह होते हैं। या गेंद नुमा गोल पत्थर ये मनुष्य वे होते हैं जिनमें क्षणभर की भी स्थिरता नहीं होती वे स्वयं तो सिद्धान्तों पर टिकते ही नहीं जिनसे टकरा जाये उन्हें भी लुढ़का देते हैं। चौथे प्रकार के मनुष्य चौकोर पत्थर की तरह होते हैं जो दूसरों को धक्का देकर लुढ़का तो देते हैं परन्तु स्वयं नहीं लुढ़कते अर्थात भ्रमित कर देते हैं होते नहीं ।

108

''सम्मान किसका''

तीनों लोक और तीनों कालों में अच्छाई और अच्छे व्यक्तियों का सम्मान सर्वोपरि रहा है। उन अच्छे व्यक्तियों को और अच्छाइयों को जो समझते हैं वे भी अच्छे ही कहलाते हैं तथा वे उन्हें प्राप्त करने के लिये सदैव प्रयासरत रहते हैं। कदाचित् जो उन्हें नहीं समझते वे भी उनके प्रति बुराई से नहीं भरते। हाँ कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो उन अच्छे व्यक्तियों की अच्छाइयों के माध्यम से अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति नहीं कर पा रहे हों तब वे उनसे नफरत कर सकते हैं किन्तु वह भी तब तक जब तक उन्हें इस सत्यता का बोध न हुआ हो कि अच्छे व्यक्ति व अच्छाई उसकी स्वार्थ सिद्धि में कदापि बाधक नहीं । उसकी स्वार्थ सिद्धि में बाधक तो उसका पाप है। सूर्य के धवल प्रकाश और चन्द्रमा की शीतल चाँदनी की कौन प्रशंसा नहीं करता क्योकि वे सबके इष्ट कार्य में सहायक ही होते हैं कदाचित् चोर या उल्लू चन्द्रमा की चाँदनी या सूर्य के प्रकाश की निंदा कर दे किन्तु प्रीति तो उनकी भी प्रकाश से रहती है। चोर चोरी के समय भले ही लाइट बंद करे परन्तु घर लौटने पर प्रकाश का सहारा लेना ही पड़ेगा और उल्लू भले ही प्रकाश की निन्दा करे किन्तु उसे अपनी आँखों में तो प्रकाश की आवश्यकता होती ही है। महापुरुष का प्रभाव, तेज, पराक्रम हर कोई सहन नहीं कर सकता, सागर का पानी किसके चुल्लू में समाया है अरे प्रत्येक झरना बहकर सागर के पास ही तो आया है नहीं तो उसने अपने अस्तित्व को गवाँया है।

109

''जस को तस''

लोग कहते हैं नमक के बदले नमक और गुड़ के बदले में गुड़ मिलता है। बुरे व्यक्तियों के साथ किया गया अच्छा व्यवहार भी तुम्हें आज नहीं तो कल अच्छा ही फल देगा और अच्छे व्यक्तियों के साथ किया गया बुरा व्यवहार भी तुम्हें अशुभ ही भोगना पड़ेगा । बुरे के साथ बुरे का फल तो तत्काल मिल ही जाता है तो अच्छे व्यक्ति के साथ किया अच्छे का फल भी इसी तरह सम्भव है। बबूल के पेड़ों के बीच में बबूल का पेड़ जल्दी लगाया जा सकता है तो कमल सरोवर में कमल । कदाचित् कोई व्यक्ति बबूल के वृक्षों के मध्य जलाशय में कमल लगाये तो उस पर काँटे नहीं लगेंगें और कमल के पुष्पों के मध्य में बबूल को लगाने पर भी वह बबूल काँटों से मुक्त नहीं हो जायेगा । जो जैसा कर्म करता है वह वैसा ही फल प्राप्त करता है।

110

''बूंद में सागर''

बुद्धिमान् व्यक्ति वह नहीं होता जो बहुत बोलता है किन्तु बुद्धिमान् वह होता है जो बहुत अच्छा बोलता है। किन्तु ज्ञानी तो वही होता है जो अल्प शब्दों में सारभूत शिक्षा दे दे । परमज्ञानी वह है जो बिना बोले ही सब कुछ बता दे । जिन्दगी का राज सीखना है तो उनसे सीखो जो बिना बोले अपने आचरण से सफलता की सीढ़ी दिखा दें और सन्तुष्टि का राज उसी से मिल सकता है जो कभी सन्तोष की याचना न करे अर्थात् स्वयं संतुष्ट होते हुये दूसरों के असन्तोष को नष्ट कर सके । स्वयं रूठ जाना और दूसरों से मनाने की अपेक्षा रखना यह जघन्य व्यक्तियों का काम है। दूसरों को नाराज करना अधम व्यक्तियों का काम है। स्वयं कभी न रूठना मध्यम का काम है जो जीवन में कभी न रूठे और जिससे कोई न रूठे ऐसे उत्तम पुरुषों के पास ही जीवन के जीवन सूत्रों को सीखा जा सकता है। नीतिकारों ने यह सूत्र ठीक ही लिखा है।

कम बोलो पर सब कुछ बता दो खुद न रूठो पर सबको हँसा दो

यही राज है जिंदगी का जियो और जीना सिखा दो ।

111

''सर्व प्रिय कोई नहीं''

संसार में विभिन्न नाम, लक्षण, स्वभाव, विशेषता, गुण व धर्मों वाले पदार्थ हैं। और संसार में जितने भी जीव हैं वे अपनी -अपनी रुचि के अनुसार अलग -अलग पदार्थो को ही पसन्द करते हैं। श्वान हड्डी को पसन्द करता है तो गजराज गन्ने को, काक नीम की निबोरी खाता है तो कोयल आम, ऊँट को बबूल व नीम की पत्तियाँ भी अच्छी लगती हैं, किन्तु हंस दूध को ही पीता है। माँसाहारी पशुओं को माँस पसन्द है तो शाकाहारी जीवों को घाँस फूस । हर शिशु को अपनी माँ का ही दूध पसन्द है चाहे वो कैसी भी हो । एक पर्वत से निकलने वाली दो नदियों में और एक वृक्ष पर लगने वाले दो फलों में भी समानता नही देखी जाती । दो युग्म सहोदरों में भी रूप रंग आकृति एक होते हुये भी प्रकृति विषमता देखी जाती है। शूकर विष्टा से भी संतुष्ट हो जाता है। सज्जन यथेष्ट मिष्ठानों मे भी आसक्ति नहीं रखता । शुक (तोता) हरी मिर्च भी चाव से खाते है किन्तु मैना दूध भात मिश्री भी मुश्किल से खाती है। संसार में ऐसा व्यक्ति खोजना असम्भव है जो सबके लिये प्रिय हो और ऐसा भी असम्भव है जो सबके लिये अप्रिय हो । सज्जन सज्जनों को प्रिय हो सकते हैं दुर्जनों को नहीं । अतः सबको संतुष्ट करने की कोशिश मत करो जिस कार्य के करने में तुम्हारी आत्मा व परमात्मा संतुष्ट हो जाये बस उतना ही पर्याप्त है।